सम्पूर्ण
हस्तरेखा

कीरो

# हस्त रेखा विज्ञान

हस्त रेखा ज्ञान पर आधारित सुगम सुलभ एवं महत्वपूर्ण ज्ञानवर्द्धक पुस्तक जो सबों के लिए अत्यन्त लाभदायक है ।

संकलनकर्ता :-

**नागेन्द्र प्रसाद सिंह**

अंक ज्योतिष एवं हस्तरेखा विशेषज्ञ

प्रकाशक

**प्रकाश पब्लिकेशन**

9/2409, गली नं० 13, कैलाश नगर, दिल्ली-31

☎: 22073171

मूल्य : 12/- रु०

*प्रकाशक :*
**प्रकाश पब्लिकेशन**
9/2409, गली नं० 13, कैलाश नगर
दिल्ली-31, फोन : 22073171

●

*प्रमुख विक्रेता*
**नारायण एण्ड को० बुकसेलर्स**
सालिमपुर अहरा, दलदली रोड, पटना-3
फोन : 2685702, 2689011

●

**नारायण बुक डिपो**
अनुग्रह सेवा सदन लेन, खजांची रोड
पटना-4

●

संकलनकर्ता : नागेन्द्र प्रसाद सिंह

●

मूल्य - बारह रुपये मात्र



# कीरो
# हस्त रेखा विज्ञान

विचारों से उत्पन्न होने वाली धाराएँ हाथ की रेखाओं में आकर अपना स्थान बना लेती है ।

## हस्त रेखाएं बोलती हैं

हस्त रेखाओं के रूप में हर प्राणी के हाथ पर उसका भूत, भविष्य एवं वर्तमान हीं नहीं बल्कि उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं चरित्र भी अंकित रहता है जिसकी जानकारी आपको तभी मिल सकती है जब आपको इन हस्त रेखाओं की भाषा का पूरा ज्ञान हो तो आप स्वयं भी लाभ उठा सकते हैं, क्योंकि अच्छा, बुरा लाभ, हानि, शुभ, अशुभ इत्यादि घटनाएँ इन हस्त रेखाओं में अनेक गोपनीय भेद छुपे रहते हैं जिन्हें समझने के लिए अपनी बुद्धि का पूरा-पूरा प्रयोग करना पड़ता है । ज्योतिष इतना सरल नहीं जो कुछ दिनों में ही इसें समझ कर अपने को ज्योतिषी समझ बैठें, किन्तु इतना कठिन भी नहीं है जिसे आप समझ ही न पायें । क्योंकि गाते-गाते राग, बजाते-बजाते साज ।

यह पुस्तक अत्यन्त सरल भाषा में इसीलिए प्रस्तुत की गई है कि ज्योतिषी विद्या का हर विद्यार्थी स्वयं ही इसे समझ सके, रेखाओं के गोपनीय भेदों को जान सके । यही मेरी भावना है । माँ सरस्वती से कामना एवं आराधना है । हस्त रेखा की जानकारी कोई गुलाब के फूलों की बिछाना नहीं है । इसके लिये समय शोध आस्था एवं परिश्रम की जरूरत है ।

भवदीय,
नागेन्द्र

## हाथों की बनावट और आपका भाग्य

प्रत्येक मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है । जैसे मुण्डे-मुण्डे मति भिन्ना । वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति की हस्त रेखाएँ भी भिन्न होती हैं । हाथ की यह लकीरें वास्तव में प्रकृति द्वारा लिखी एक ज्योतिष ग्रन्थ ही है जो अपने भाग्य को बतला सकता है अथवा जिसे पढ़ कर आप अपने भाग्य के बारे में जान सकते हैं इन लकीरों, रेखाओं का संबंध हर मानव के जीवन से जुड़ा हुआ है । जो तीनों काल भूत, वर्तमान एवं भविष्य के लिये उपयोगी है ।

हस्त रेखा विज्ञान के प्राचीन अभिलेख हिन्दुओं, ( भारत ) में ही पाये जाते हैं, परन्तु यह विज्ञान एक दूसरे देश तक कैसे पहुँचा इसकी खोज करना तो असम्भव है किन्तु आज जब हम ज्योतिष विद्या को फैलते देखते हैं तो हमें इस बात की खुशी होती है कि यह ज्ञान दिन-प्रतिदिन फैल रहा है । जिसका मतलब हस्त रेखा का महत्व बढ़ रहा है ।

मैं कुछ वर्ष पूर्व पटना अस्पताल के वार्ड से गुजर रहा था तभी ऐसे विचार मेरे मन में आया कि मुझे किसी रोगी की हस्त रेखाओं को पढ़ना चाहिए तथा उसके शारीरिक एवं मानसिक खामियों को परखना चाहिए । सच्चाई का पता लगाना चाहिये । यथार्थ में हस्त रेखा विज्ञान पूर्ण रूप से हाथों का अध्ययन करता है इस कारण से यह दो भागों में बंट जाता है जो इस प्रकार हैं :

1. कीरोनोमी
2. कीरोमेन्सी

इनमें से पहला भाग हाथों तथा अंगुलियों की बनावट एवं आकार का अध्ययन करता है । यह चरित्र, प्रवृति एवं वंशानुगत प्रभाव से संम्बंधित है । पुरुष का दाहिना हाथ और स्त्री का बायाँ हाथ देखें । पर उन महिलाओं का दाहिना हाथ देखें जो नौकरी में है, नर्स, डाक्टर या प्रोफेसर है । तेरह साल तक के बालकों का बायाँ हाथ देखें ।

अब यह बात तो स्पष्ट हो जाती है कि इस अध्ययन का दूसरा भाग पहले भाग के बिना पूर्ण नहीं हो सकता और न हीं इस अध्ययन में व्यवहारिक तौर पर हाथ देखने में विद्यार्थी की हथेली की रेखाओं एवं चिन्हों के बारे में कोई भी निर्णय लेने से पूर्ण उसकी बनावट आकार, त्वचा एवं नाखून आदि को अच्छी तरह से देख लेना चाहिए । तब निष्कर्ष निकालना चाहिए । मैंने अक्सर देखा है कि कुछ लोग इस ओर ध्यान नहीं देते, वे समझते हैं केवल हाथ की रेखाओं से ही ज्योतिष का कार्य पूरा हो जाता है, परन्तु ऐसा सोचना बिल्कुल ही गलत है, क्योंकि जब भी हम कभी ज्योतिष की बात करते हैं तो उस समय सबसे पहले इन सब बातों की ओर ध्यान देना होगा । होमियोपैथी में चप-चप की एक दवा है तो पच-पच की दूसरी दवा है । उसी तरह हस्त रेखा में भी है ।



ज्योतिष विद्या के विद्यार्थियों को यह समझ में आ जाएगा कि ऐसा सोचना बड़ी भूल है । इससे बहुत बड़ी गलतियां हो सकती है । यदि आप वास्तव में ही अच्छे और सफल भविष्यवक्ता बनना चाहते हैं तो हस्त रेखाओं के आकार को अधिक जल्दी से देखा जा सकता है । इस में सबसे मजेदार बात तो यह है कि कोई भी व्यक्ति किसी भी समय, चलते फिरते, सफर में, किसी सामारोह में अथवा कहीं भी किसी का भी भविष्य देख सकता है ।

हाथों के आकार से कई देशों की विशेषताओं को प्रदर्शित होना भी इस अध्ययन की एक अलग और रुचिपूर्ण शाखा है । परन्तु इसे ही सबसे अधिक तिरस्कृत भी किया गया है । इन विशेषताओं वाली बात को मैं इस पुस्तक के किसी अगले भाग में बताने का प्रयास करूँगा ।

जब भी आप किसी हाथ को देखते हैं तो सबसे पहले उस के आकार का भी प्रभाव मानव के भविष्य पर पड़ता है ।

कीरो जैसे महान विद्वान ने ज्योतिष्यों को नए-नए अनुभव दिए हैं । उनके परीक्षणों के पश्चात ही उन्होंने पुस्तक के रूप में उन्हें पाठकों के सामने पेश किया है । उनके इन अनुभवों की नींव पर ही मैं आपको यह बता देना चाहता हूँ कि हाथ सात

प्रकार के होते हैं : जो इस तरह से हैं :

1. प्रारम्भिक अथवा निकृष्ट श्रेणी का हाथ,
2. उपयोगी हाथ जिसे वर्गाकार भी कहा जाता है,
3. चपटा या मांसल क्रियाशील हाथ,
4. दार्शनिक या गठीला हाथ,
5. शंकवाकार अथवा कलात्मक हाथ,
6. आदर्श हाथ जो आधा नुकीला होता है,
7. मिला जुला हाथ ।

सात प्रकार के हाथों के सात ही भेद होते हैं । इसमें हमें पहली प्रकार का निकृष्ट श्रेणी का हाथ तो बहुत ही कम मिलता है । हां, वर्गाकार हाथ को उन सात प्रकार के हाथों से अलग करके बताते हैं : आओ देखें इस हाथ को :

1. चौकोर हथेली, चौकोर छोटी अंगुलियों के साथ
2. चौकोर हथेली, चौकोर लम्बी अंगुलियों के साथ,
3. चौकोर हथेली, गाँठ वाली अंगुलियों के साथ,
4. चौकोर हथेली चपटी अंगुलियों के साथ,
5. चौकोर हथेली नुकीली अंगुलियों के साथ,
6. चौकोर हथेली, अधिक नुकीली अंगुलियों के साथ,
7. चौकोर हथेली, मिश्रित अंगुलियों के साथ

बस इन सात बातों का ध्यान रखते हुए, अन्य श्रेणी के हाथों का अध्ययन करना पड़ता है । दाहिना हाथ कर्म का है और बायाँ हाथ जन्म का है । खुदा जिस प्रकार नुक्ते से जुदा हो जाता है उसी प्रकार एक छोटा सा स्टार जब रेखा भाग्य को पाताल में ले जाती है ।

## प्रारंभिक निकृष्ट श्रेणी का हाथ

इस श्रेणी के हाथ प्राकृतिक रूप से निकृष्ट मानसिकता से सम्बन्ध रखते हैं । देखने में ये खुरदुरे और भद्दे लगते हैं । ऐसे लोगों की हथेली, मोटी, बड़ी तथा भारी होती है । अंगुलियां और नाखून छोटे हैं । देखें चित्र आप को दिखाया गया है ।

इस श्रेणी के हाथ का अध्ययन करते समय हथेली अंगुलियों



की लम्बाई पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है, बौद्धिक स्तर की उच्चता हेतु अंगुलियों का हथेली से लम्बा होना जरूरी होता है । उसे ही हम शुभ मान सकते हैं ।

'परन्तु' कुछ विद्वान इस बात से सहमत नहीं है, उन्होंने अपने परीक्षणों से यह सिद्ध किया है कि यह जरूरी नहीं कि अंगुलियां हथेली से लम्बी पायी जाती हों, वैसे ऐसे मामले बहुत कम नजर में आए हैं कि अंगुलियां हथेली से कुछ कम लम्बी हों अथवा बराबर हों ।

जब हथेली के आकार के हिसाब से अंगुलियां कुछ अधिक लम्बी हों तो छोटी होने की तुलना में ये उच्च बौद्धिक प्रवृति की द्योतक होती है। डा० 'कैन' ने मानव शरीर की आकृति देख कर "चरित्र बताने की विद्या" विषय पर लिखी अपनी पुस्तक में लिखा है :

"क्रुर लोगों की हथेली हमेशा मोटी तथा भद्दी होती है, तथा अंगुलियां भी मोटी तथा भद्दी होती है, ऐसी हथेली पर बहुत कम रेखाएँ देखी जाती है, ऐसे हाथ वाले लोगों में मानसिक योग्यता बहुत कम होती है और वे जो कुछ प्राप्त करते हैं उनका अधिकांश झुकाव तो असभ्यता की ओर ही होती है। अपनी भावनाओं पर उनका नियंत्रण कम होता है। कई लोगों पर तो बिल्कुल ही नहीं होता है। आकार, रंग व सुन्दरता के प्रति प्रेम उन्हें आकृष्ट नहीं करता, सामान्य तौर पर ऐसे हाथ में अंगुठा छोटा तथा मोटा होता है। और उनके नाखूनों का ऊपरी भाग मोटा, भारी एवं सामान्य तौर पर चौकोर होता है, ऐसे लोग हिंसात्मक प्रवृति के एवं शीघ्र क्रोध में आकर किसी की हत्या भी कर सकते हैं। देखें चित्र

ऐसे लोग देखने में ऐसे लगते हैं, जैसे उनकी कोई महत्वकांक्षा
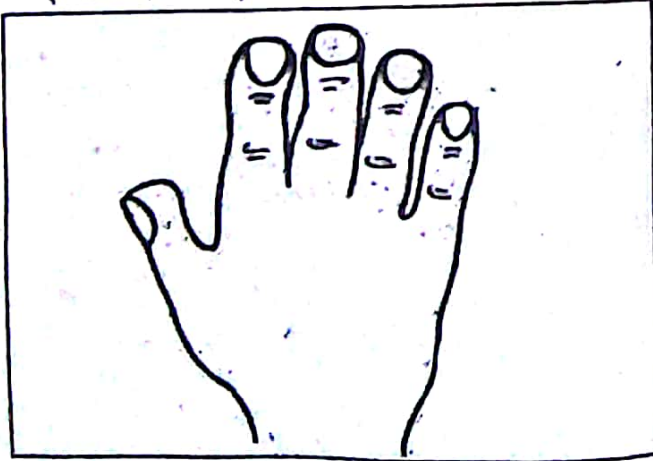
न हो। ऐसे लोग धरती पर केवल खाने, पीने और सोने के लिए ही आते हैं। ये कोई आविष्कार नहीं कर सकते और न ही उनके मन में कोई नवीन भावना पैदा होती है। ये लोग उत्साही न होते हैं।

## वर्गाकार हाथ

वर्गाकार हाथ कर्मठ काम करने वाला होता है। धार्मिक रीति-रिवाजों को शान-शौकत से मानते हैं। लेखन कार्यों में रूचि लेते हैं।

देखें चित्र, ऐसे ही एक चौकोर हाथ का चित्र दिखाया गया है। चित्र को आप देख कर हाथ का ही अंदाजा लगा सकते हैं।

मगर ऐसे लोगों की कलाइयां भी चकौर ही होती है।

हम लोग ऐसे हाथों को उपयोगी मानते हैं। ऐसे हाथों के नाखुन प्रायः छोटे होते हैं और नुकीले भी होते हैं।

ऐसे प्राणी समय पर अपना काम पूरा करने की क्षमता रखते हैं।

ऐसे लोग अनुशासनप्रिय होते हैं। ऐसे लोग घर और बाहर सब ओर सफाई पसंद करते हैं, इन्हें लड़ाई झगड़ों से घृणा तथा शांति से प्यार होता है। इनकी बातों पर विश्वास किया जा सकता है क्योंकि यह किसी को धोखा नहीं देते। वे धर्म की मर्यादा का सदा पालन करते हैं और सिद्धांतों का दृढ़ता से पालन करते हैं। ये लोग भौतिक सुखों के इच्छुक नहीं होते वे व्यवहारिकता में सफलता प्राप्त करते हैं। ऐसे लोग धर्म में भी अतिवाद के सिद्धांत तक नहीं जाते। ऐसे लोग दिखाने में अधिक सिद्धांतों को महत्व देते हैं, ऐसे लोगों को आम आदमी पसंद भी नहीं करते बल्कि वे स्वयं भी लोगों को कम पसंद करते हैं। इनके कामों में पूरी सटीकता, चरित्रशक्ति एवं इच्छाशक्ति पाई जाती है। इसके कारण लोग उन्हें अधिक बुद्धिमान मानते हैं। इनकी रूचि कृषि-कार्य एवं व्यापार में अधिक होती है ये व्यवसाय में बड़े ईमानदार होते हैं। ऐस हाथ वाले लोगों को अपनी बुद्धि पर सर्वाधिक विश्वास होता है। वे जो कुछ कहते हैं उसे पूरा करके
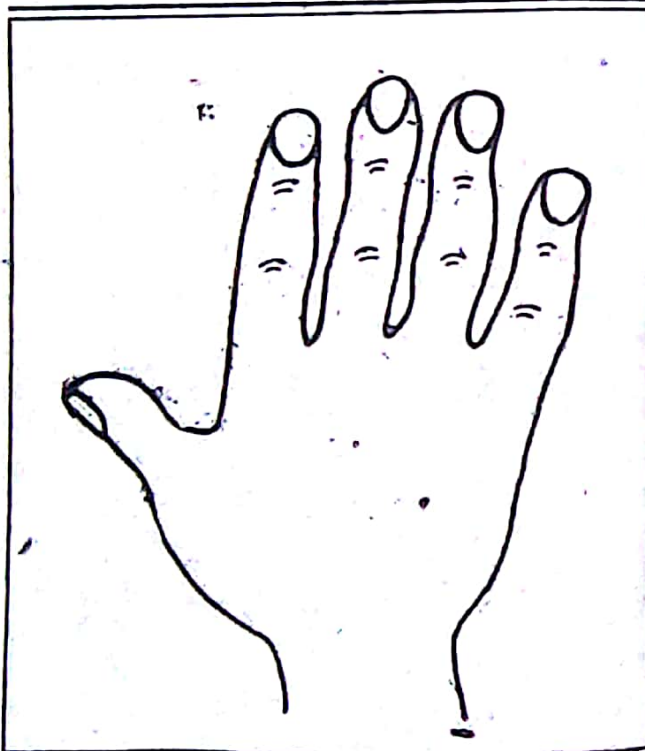
ही दिखाते हैं यही उनकी सबसे बड़ी विशेषता होती है । वे आत्मविश्वसी, लोक कल्याण के कार्यों को मन से पसंद करते हैं।

## चौकोर हाथ और छोटी अंगुलियां

ऐसे हाथ वाले लोगों की पहचान करना कोई कठिन नहीं होता ऐसे लोग बहुत दृढ़ विश्वासी होते हुए हर समय यही कहते नजर आते हैं कि मैं जो कुछ भी अपने कानों से सुनता हूँ तथा अपनी आंखों से देखता हूँ इसके अतिरिक्त और किसी पर विश्वास नहीं करता । मुझे तो इसके पश्चात भी सन्देह होता है कि ऐसे विश्वास नहीं करता । इससे यह बात स्पष्ट होती है कि



वे जिद्दी स्वभाव के होते हैं । ऐसे लोग अपने परिश्रम से ही धन कमाते हैं । धन कामने की लालसा उनके मन में अधिक होती है ।

## चौकोर हाथ तथा लम्बी अंगुलियां

चौकोर हाथ के ऊपर यदि लम्बी चौकोर अंगुलियां है तो यह संकेत है कि मानसिकता के उच्च विकास का ऐसे हाथ वाले लोग वैज्ञानिक परीक्षणों में अधिक रूचि रखते हैं इनके मन में हर क्षण कुछ न कुछ करने की, चाह होती है ।

## चौकोर हाथ और गठीली अंगुलियां

ऐसे हाथ का आकार अक्सर लम्बी अंगुलियों में ही पाया जाता है ऐसे लोग नवनिर्माण में अधिक रूचि रखते हैं और हर रोज नयी नयी योजनाएँ बनाते है किन्तु ऐसे लोग कोई भी आविष्कार नहीं कर सकते । ऐसे लोग यदि विज्ञान में रूचि ले तो कोई न कोई चमत्कार अवश्य कर सकते हैं ।

## चौकोर हाथ की चपटी अंगुलियां

ऐसे हाथों को ज्योतिष विद्या में अविष्कारी हाथ कहा जाता है वे हर समय अपने मन में किसी न किसी नये अविष्कार की भावना लिये घूमते रहते हैं सदा ऊँचा उड़ने की बातें सोचते रहते हैं । अच्छे योग्य अभिवक्ता भी बन सकते हैं । अच्छे योग यन्त्रों की रचना चौकोर हाथ तथा चपटी अंगुलियों वाले प्राणियों द्वारा ही की गई है ।

## चौकोर हाथ और नुकीली अंगुलियां

यह बात तो सत्य है कि मधुर संगीत की धुने तैयार करने में ऐसे लोगों का सबसे बड़ा योगदान रहा है । चौकोर हाथ असल में एक विद्यार्थी का हाथ माना जाता है । नुकीली अंगुलियां कला की जन्मदाता होती हैं । ऐसे लोग स्वभाव से कला प्रेमी होते हैं, कला इनके जीवन का अंग बनकर रह जाती है । कला के दिवाने होते हैं, ये लोग इनकी कल्पना की उड़ान बहुत ऊंची होती है ये छोटे विचारों के लोगों से घृणा करते हैं । गरीब होकर भी इनमें विचार छोटे नहीं होते ।
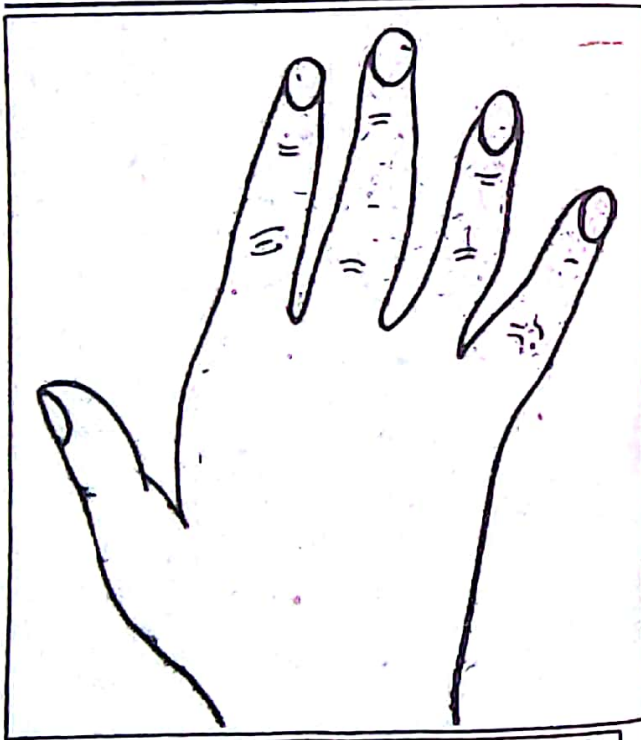
## चौकोर हाथ और चमसाकार अंगुलियां

जब हाथ की हथेली चौड़ी होकर अंगुलियों की तरफ जाती हुई नुकीली हो जाती हैं हाथ कलाई की ओर ढलान पर होता है मान लीजिये कोई हाथ चपटा होते हुए मजबूत भी हो तो ऐसे लोगों का स्वभाव उत्तेजित होता है किन्तु ऐसे लोग अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए शक्ति एवं उत्साह से भरे होते हैं । यदि ऐसा हाथ मुलायम या गुदगुदा हो ऐसे लोगों का स्वभाव चंचल और क्रोधी होता है । ये हर काम को जल्दी पूरा करना चाहते हैं किन्तु दृढ़ता से कोई काम नहीं कर पाते ।



ऐसे हाथ वाले लोगों को कार्य शक्ति एवं स्वतंत्रता के प्रति अत्याधिक प्रेम होता है और ऐसे लोग महान सामुद्रिक यात्रा, खोज कर्त्ता, आविष्कारक और यंत्र विद्या के ज्ञानी होते हैं । ऐसे विकसित हाथ वाले लोगों में कुछ लोग गायक, कलाकार, डॉक्टर, उपदेशक और नयी नयी कलाओं के रचयिता होते हैं । और अपने ही विचारों में डूबे रहते हैं ।

देखें चित्र में ऐसे ही एक हाथ का चित्र दिखाया गया है । इस चित्र की सहायता से आप ऐसे हाथ वाले लोगों के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । ऐसे हाथ को देखते समय
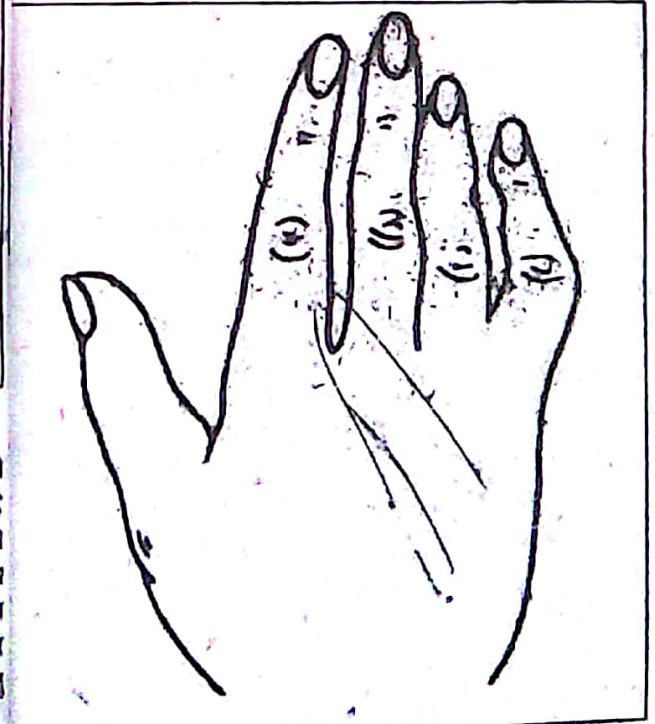
इसकी बनावट की ओर पूरा ध्यान दें क्योंकि ऐसे हाथ को हम साधारण हाथ नहीं कह सकते । क्योंकि ऐसे हाथ वाले लोग सनकी भी होते हैं । पुरानी रूढ़िवादी बातों से ये लोग घृणा करते हैं ।

## दार्शनिक हाथ

दार्शनिक हाथ में अंगुलियाँ लम्बी और गाँठनुमा होती है । छोटी चीज का अधिक विश्लेषण पसन्द करते हैं । स्वतंत्र विचार धारा के आदमी होते हैं । इसे ही कहते हैं जैसा नाम वैसा काम । दार्शनिक लोगों के बारे में भला कौन नहीं जानता इनकी हर बात दुनियां से अलग होती है फिलॉसफी शब्द यूनानी भाषा का है जिसका अर्थ जीवित और सोफिया यानि ज्ञान से मिलकर बना है । इस हाथ का आकार तो सबसे पहले ही पहचान में आ जाता है । वैसे यह हाथ चित्र नं० 5 वाले चित्र से ही काफी मिलता जुलता है इसलिए ऐसे हाथ को समझने में अधिक समय नहीं लगता है ।

इस हाथ वाले प्राणी धन के मामले में सबसे पिछड़े हुए और दिमाग के मामले में सबसे अमीर होते हैं । एसे लोग किसी विचित्र विषय के छात्र भी होते है। हर समय अपनी अधुरी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए व्याकुल भी रहते हैं जिसके कारण एक स्थान पर टिक कर बैठना उनके लिए सम्भव नहीं होता । उनका ज्ञान मनुष्य के ऊपर विजय प्राप्त करने वाली बात की तरह है हारने की बात तो वे सोच ही नहीं सकते, विजय पाना ही उनकी प्रबल इच्छा होती है । झूठ से घृणा और झूठे लोगों के शत्रु, बुरे काम करने वाले पापी लोगों की छाया से ही दूर भागते हैं किसी का बुरा नहीं कर सकते हैं, हाँ भलाई करने के लिए सबसे आगे रहते हैं । ऐसे लोग उपदेश तो देते है किन्तु उनके उपदेश लोगों की समझ से बाहर होते है । उनके विचार आकाश की भाँति ऊंचे होते हैं, आदर्शों की बातें करते स्वयं कहीं न कहीं भटक ही जाते है । यदि कोई उन्हें जरा सी बुरी बात कह देता है तो वह बात उनके मस्तिष्क में बोझ बन जाती है । इनमें कुछ ऐसे भी निकल आते हैं जो रिश्तों-नातों को भी नहीं मानते ।



## नुकीले हाथ

नुकीले हाथ की सबसे बड़ी पहचान यह है कि यह मध्यम आकार का होता है । इसकी हथेली आगे से कुछ तंग होती है । अंगुलियाँ मूल स्थान मे पुष्ट तथा अग्रम भाग में नाखुन वाले भाग में से नुकीली होती हैं । इस हाथ को आदर्शवादी हाथ कहा जाता है जो लम्बा पतला और अधिक नुकीली अंगुलियों वाला होता है इस नुकीले हाथ की कुछ विशेषताएं इस प्रकार होती है ।

मानसिक प्रेरणा एवं सहज ज्ञान वस्तुतः अधिकतर लोग नुकीले हाथ वाले व्यक्ति आवेग की सन्तान कहे जाते हैं । ऐसे हाथ बड़े मुलायम तथा चिकने होते हैं । इनमें धैर्य की बहुत कमी होती है, बात बात पर भावुक होते हैं जिसके कारण इन्हें बहुत सफलता मिलती है भावुकता अधिक होने पर सफलता नही मिलती । इनके मिजीज में स्वार्थीपन आ जाता है । गरीबों को धन देने के लिए सबसे अधिक खुले दिल के होते हैं । ऐसे हाथों को कलात्मक हाथ भी कहा जाता है किन्तु यह नाम उनकी योजनाएं बनाने से सम्बन्ध रखता है क्योंकि वे उन कलात्मक को काव्य के रूप में परिणित नहीं कर पाते ।

यदि नुकीला हाथ लचीला हो तो ऐसे व्यक्ति में पूर्व वर्णित हाथ के सभी गुण तो होते ही हैं, साथ ही अधिक स्फुर्ति व इच्छा शक्ति की दृढ़ता भी पाई जाती है ।

ऐसे लोगों का स्वभाव कठोर होता है । विचारों में दृढ़ता होती है । ऐसे हाथों को हम कलात्मक हाथ भी कह सकते हैं । इनके विचार ऊंचे होते हैं । उनमें रहस्यवाद की झलक नजर आती है ।

## आदर्शवादी हाथ

भौतिक सुख, काम इनसे कोसों दूर रहता है । गुलाबी रंगवाला हाथ जिसकी त्वचा मुलायम होती है । अंगूठा छोटा होता है । Psychic hand यह हाथ अपने शुद्ध आकार में बहुत कम मिलता है किन्तु इस प्रकार का हाथ मिलना बहुत कठिन है ।

किंतु ऐसे हाथ यदि नहीं मिलते फिर भी उनसे मिलते-जुल
अवश्य मिलते हैं । इनकी अंगुलियां पतली तथा लम्बी होती है
ऐसे हाथ वाले लोगों को आम आदमियों से काफी सहानुभू
रहती है । मगर इन्हें जीवन में अधिक सुख नहीं मिल पाता,
लोग अक्सर संघर्ष ही करते रहते हैं, इस संघर्ष का परिणाम
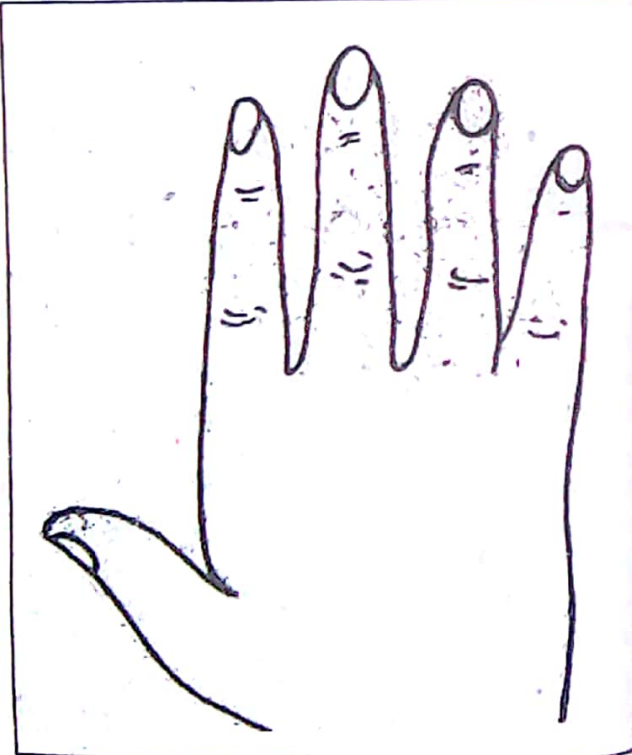
जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह हाथ आदर्शवादी लो
का हाथ होता है । ये प्रत्येक आकार प्रकार में सुन्दरता की
प्रशंसा करते हैं, उन्हें हर सुन्दर वस्तु से प्यार होता है ।



ऐसे हाथ वाले लोग बड़े खुले दिल के होने के कारण सब पर भरोसा करते हैं । खुले दिल के शुद्ध मन के होने के कारण किसी को धोखा नहीं देते । देखें चित्र में आपको ऐसे ही एक हाथ का चित्र दिखाया गया है ।

आदर्शवादी लोग केवल अपने आदर्शों की पूर्ति के लिए संसार भर के कष्ट सहन करने के लिए तैयार हो जाते हैं ।

ऐसे हाथ वाले व्यक्ति स्वप्निल संसार में भी सुख से जी लेते हैं । ऐसे लोगों को इस बात का कोई ज्ञान नहीं होता कि व्यवहारिक सवसायोचित एवं तार्किक कैसे बना जाए । उनके लिए व्यवस्था, समय की पाबंदी एवं अनुशासन का कोई सिद्धांत नहीं । अपनी इच्छा के विरुद्ध भी लोगों की भीड़ द्वारा उन्हें चाहे जिस ओर भी मोड़ सकते हैं ।

ऐसे हाथ वाले लोग आदर्शवादी होने के साथ-साथ बड़े ही स्पष्ट हृदय के होते हैं । वे किसी का बुरा तो नहीं करते, हाँ लोग उनके बुरे ही अवश्य सोचते रहते हैं ।

## मिला जुला आम हाथ

ऐसे लोगों के हाथ के बार में बहुत जल्द कोई निर्णय लेना कठिन होता है, ऐसे हाथों को हम निर्देशक का हाथ भी कह सकते हैं । ऐसे ....हाथों की कोई श्रेणी नहीं होती, यह तो आम चलते फिरते हाथ हैं ।

ऐसे लोग विचारशील, चंचल, परिवर्तनशील स्वभाव के कारण हर प्रकार के लोगों में काफी मजे से घुल मिल जाते हैं ।

मिले जुले हाथ के लोगों के काम भी तो मिले-जुले होते हैं एक साथ-साथ अनेक काम करते रहते हैं । फिर भी उन्हें सफलता का मुँह तो कम ही देखना पड़ता है ।

ऐसे लोग कूटनीति एवं चतुराई के कार्यों में अधिक सिद्ध हैं । वे इतने चंचल तथा अस्थिर होते हैं कि वे हर स्थिति में गुजारा कर लेते हैं । हर काम करने में सबसे आगे रहते हैं । हर श्रेणी का कार्य करने के लिए तैयार हो जाते हैं ।

कभी तो वे कला की बातें करते हैं परन्तु दूसरे ही क्षण ये

लोग मशीनें बनाने के कारखानों की बातें आरम्भ कर देते हैं।

कभी ये लोग करोड़ों की बातें करते हैं परन्तु दूसरे ही क्षण ये लोग मशीने बनाने के कारखानों की बातें आरम्भ कर देंगे कभी झोपड़ी बनाने के लिए भी चिंतित दिखाई देंगे।

कभी जोर-जोर से हँसने लगेंगे, मगर दूसरे ही क्षण आँसू बहाते नजर आएंगे। ऐसे लोगों को आमतौर पर, हरफनमौला कहा जाता है, इनसे कोई भी काम ले लो, कोई भी काम करवा लो, इनकी जुबान पर न शब्द कभी आता ही नहीं। काम को शुरू करने के बाद परिवर्तन कर देते हैं। समाज में भी ऐसे हाथ वाले का अस्तित्व कम रहता है। किसी काम में कुशलता नाम की कोई चीज नहीं होती। विभिन्न विचार धाराओं के होते हुए भी दूसरों के विचारों को अपना लेते हैं। ऐसे हाथों में कई प्रकार के विचारों को अपना लेते हैं ऐसे हाथों में कई प्रकार के शुभ एवं अशुभ गुणों का समावेश होता है।

## हस्त रेखाऐं और हाथों की अंगुलियां व नाखुन

जब भी हम हस्त रेखा ज्ञान की बात करते हैं तो हाथ की बनावट के साथ-साथ की अंगुलियों का भी मिलान करना पड़ता है इसके बिना हमारा ज्योतिष अधूरा रह जाता है।

इस बात को बहुत कम लोग जानते हैं कि हमारा ज्योतिष हाथ के अंगूठे से आरम्भ होता है, और इस अंगूठे ने ही सारे विश्व में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। यह भी कोई कम विचित्र बात नहीं कि पूर्वी देशों की कई आदिवासी जातियों में जब कोई कैदी, बंदी बनने वाले व्यक्ति के सामने अंगुलियों से अंगूठे को ढक लेता था तो समझा जाता था कि उसने अपनी स्वतंत्रता को त्याग कर आत्मसर्पण कर दिया है। इजराइल के युद्ध वृत्तांतों में हम यह पढ़ते हैं कि वे अपने शत्रु का अंगूठा काट देते थे।

जिप्सी लोग किसी के चरित्र के विषय में निर्णय लेने से पूर्व किसी भी अन्य तथ्य से अंगूठे को अधिक महत्व देते हैं। मैं अक्सर उन्हें अंगूठे की स्थिति की बनावट के हिसाब से गणना



करते हुए देखा है।

इस में कोई संदेह नहीं कि हमारे देश में हाथ देखने के बहुत से तरीके हैं। मगर प्राचीन काल से हमारा ज्योतिष अंगूठे के चारो ओर घूमता रहा है। चीन में भी ज्योतिष अंगूठे से ही चलता है यही नहीं ईसाई मत में भी अंगूठे का विशेष महत्व है इस धर्म के गुरुओं का मत है कि प्राणी का अंगूठा ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है, इसको प्रथम अंगूली सम्बोधित करके प्रभु यीशु माना गया है। जो ईश्वर की इच्छा प्रतिनिधि है। मानव हाथों में यही एक अंगुली है जो किसी दूसरी अंगुली की सहायता के बिना सीधी खड़ी रहती है। जब हम ज्योतिष दृष्टि से देखते हैं तो इससे यही निर्णय निकाला जा सकता है कि अंगूठा जितना भी सुदृढ़ होगा उतना प्राणी का बौद्धिक ज्ञान, आत्मबल, उच्च श्रेणी का होगा, यदि इससे विपरीत होगा तो समझो उसका फल भी विपरीत ही होगा। ऐसे प्राणी जिनका अंगूठा छोटा, भद्दा एवं मोटा होगा वे अपने विचारों में क्रूरता रखे हुए जानवरों जैसी
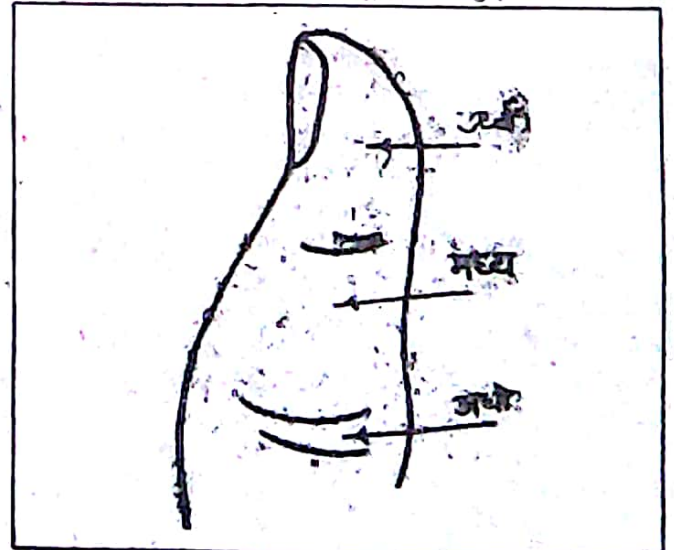
बुद्धिवाले होते हैं। उनसे किसी अच्छे कार्य की तो आशा ही नहीं की जा सकती।

जिन लोगों का अंगूठा लम्बा तथा संगठित होगा वे लोग बुद्धिजीवी एवं सुस्पष्ट विचारों के होते हैं अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अपनी बुद्धि का अधिक से अधिक प्रयोग करते हैं।

इससे एक बात तो समझ लेनी चाहिए कि संगठित और लम्बे अंगूठे वाले लोग भाग्यशील होते हैं। अंगूठा हथेली से अधिक दूर नहीं हो तो अच्छा है।

देखें चित्र में आपको एक अंगूठा दिखाया जा रहा है, जिसके सारे भाग अलग अलग दिखाये गए हैं। ज्योतिष विद्या में हर भाग अपना एक स्थान अलग से रखता है, किन्तु इस को समझने के लिए हम आगे बढ़ते हैं।

जैसा कि चित्र में स्पष्ट है कि हमारा अंगूठा तीन भागों में बँटा हुआ है।

## प्रथम पर्व : नाखुन

नाखुन का कार्य है इच्छा शक्ति की ओर संकेत करना। हम लोग प्राणी की इच्छा शक्ति का ज्ञान अंगूठे के नाखुनों द्वारा कर सकते हैं।

जिन लोगों का अंगूठा असामान्य रूप से विकसित होता है जैसे कि पहला पर्व बहुत अधिक लम्बा हो, ऐसे प्राणी तर्क या विवेक पर नहीं बल्कि अपनी इच्छाशक्ति पर निर्भर रहते हैं।

जब दूसरा पर्व पहले की अपेक्षा अधिक लम्बा हो, तो ऐसे व्यक्ति यथार्थ विवेकी एवं शांत-स्वभाव के धैर्यवान होते हैं। परन्तु ऐसे लोग अपने विचारों को इच्छाशक्ति एवं निश्चय की कमी के कारण पूरा नहीं कर पाते।

तीसरा पर्व यदि लम्बा हो तो अंगूठा छोटा हो तो ऐसे प्राणी अधिक वासनामय एवं संसारी होते हैं।

जब भी आप लोग अंगूठे का अध्ययन करते हैं तो सब से अधिक ध्यान देने योग्य बात यह है कि पहले उसे अपने हाथ में लेकर देखें कि यह लचीला है या सख्त।



यदि किसी प्राणी का अंगूठा लचीला है और उसका प्रथम पर्व आसानी से पीछे की ओर मुड़ जाता है और अंगूठे को आधे चाँद के आकार जैसा बना देता है, इसके विपरीत यदि अंगूठा सख्त है उस मे कोई लोच नहीं, इन दो विरोधी विशेषताओं का प्राणी के चरित्र से बहुत ही गहरा सम्बन्ध होता है।

जिन लोगों का अंगूठा लचीला होते हुए पीछे को बड़े आराम से मुड़ता हो, ऐसे लोग केवल पैसे के ही मामलों में नहीं बल्कि विचारों के मामले में अदूरदर्शी होते हैं। उन्हें कैसे भी लोगों के साथ बैठा दिया जाए वहीं पर घुल-मिल जाते हैं।

## सख्त जोड़ के अंगूठे

ये लोग बहुत व्यवहारिक होते हैं उनकी इच्छाशक्ति दृढ़ होती है उनका निश्चय हठी प्रकार का होता है। जो उनको चरित्रशक्ति प्रदान करता है यही उनकी सफलता का एक प्रमुख कारण है। वे लोग अधिक गुप्त तथा सचेत रहते हैं। जहाँ दूसरे स्वभाव के लोग जल्दी ही आगे बढ़ जाते हैं वहाँ पर यह लोग धीरे-धीरे ही आगे बढ़ पाते हैं। ये बड़े जिद्दी और अपनी धुन के पक्के होते हैं। ये लोग अपने घर और देश की उन्नति की ओर बहुत ध्यान देते हैं, युद्ध में बहुत वीरता दिखाने वाले बहादुर भी ऐसे ही अंगूठे वाले लोग होते हैं।

## अंगूठे का दूसरा भाग

इस भाग की विशेषता उसके दूसरे या मध्य पर्व का आकार होता है यह देखा गया है कि यह भाग सही से अलग होता है। यह जातक की प्रकृति या स्वभाव की ओर संकेत देता है। यह दो भागों में बँटा हुआ है; ऐ क बीच का भाग संकरा ढला हुआ, दूसरा भाग कम आकार वाला यानि पूरा भरा हुआ, मोटे भद्दे आकार का।

इन दोनों भागों का सम्बन्ध, मानव की प्रवृति या स्वभाव से होता है। यह देखा गया है कि जिन की कमर जैसी आकृति होती है उसका सम्बन्ध चालाकी से होता है।

अंगूठा यदि संगठन प्राणी के उच्च बौद्धिक स्तर एवं विकास का द्योतक है और अंगूठे की भद्दी बनावट इस बात का द्योतक है कि व्यक्ति अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु कुछ भी कर सकता है।

इस प्रकार कमर जैसी बनावट वाले, सुगठन का ही एक अंग है और वह मानसिक कुशलता का द्योतक है। जबकि मोटा और भद्दा अंगूठा उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शक्ति का प्रयोग किए जाने का द्योतक है।

जब किसी प्राणी के अंगूठे के नाखुन वाला भाग मोटा हो और उसका नाखुन छोटा तथा चपटा हो तो वह प्राणी की अनियंत्रित वासना, का द्योतक है। सभी जंगली प्रकार के लोगों के अंगूठे ऐसे ही होते हैं। इसी कारण उनकी वासना की आग उनकी बुद्धि की शक्ति को जला डालती है।

यदि प्रथम भाग छोटा हो या लम्बा, वह इस बात का संकेत देता है कि इस प्राणी में सहनशक्ति अधिक है, वह अपनी बुद्धि का पूरा-पूरा लाभ उठा सकता है।

वास्तव में अंगूठे का सम्बन्ध हाथ के छोटा बड़ा होने से भी रहता है। जैसा कि जो लचीले और पीछे की ओर झुके हुए अंगूठे हैं, ऐसे लोगों में नैतिक चेतना इतनी नहीं होती, जितनी कि सीधी और सुदृढ़ अंगूठे वाले लोगों में होती है।

## अंगुलियां और भाग्य

जब भी हम किसी प्राणी का हाथ देखने लगते हैं तो हमें अंगूठे के पश्चात् उस आदमी की अंगुलियों की ओर भी ध्यान देना होगा। देखें चित्र में एक हाथ दिखाया गया है जिस की अंगुलियों की बनावट देख कर मेरी निम्नो बातों को आसानी से समझ सकते हैं। अब देखते हैं इन अंगुलियों का फल यदि किसी भी प्राणी की अंगुलियों के जोड़ चिकने हो तो ऐसे प्राणी
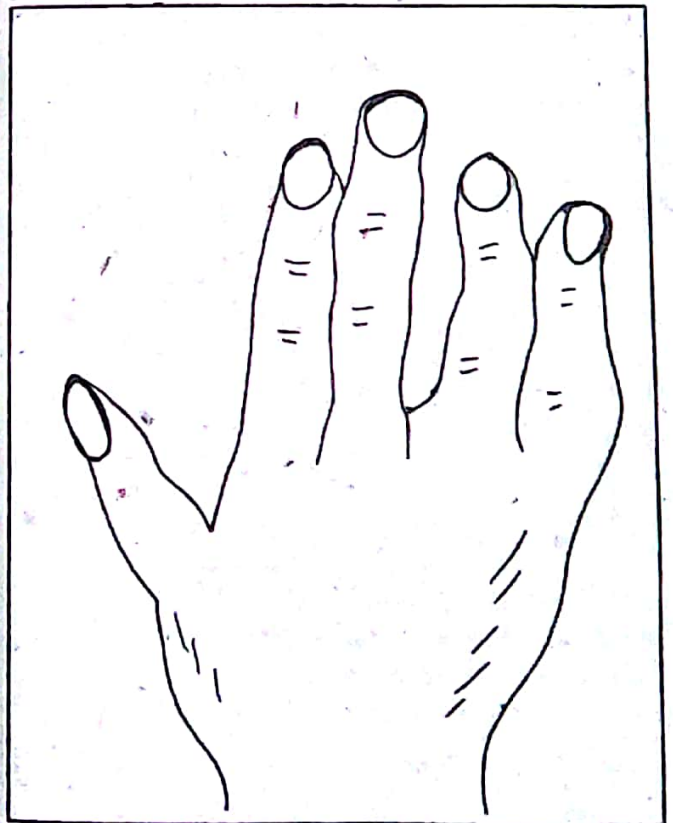


आवेशात्मक प्रवृति के होते हैं और अपने विवेक से काम लिए बिना ही किसी निर्णय पर पहुँच जाते हैं, किन्तु वह पूरी तरह समाप्त नहीं होती परिणामस्वरूप एक वैज्ञानिक जिसकी चौकोर अंगुलियां हों किन्तु जोड़ चिकने हो तो वह अपना निर्णय शीघ्र ले लेता है, किन्तु अपनी ही कार्य प्रणाली को समझ नहीं पाता ऐसे डॉक्टर भी अपने मरीज की रोग परीक्षा करेगा तो वह अपने कार्य तथा निर्णय में सही हो सकता है।

किन्तु ऐसे लोग जिनके हाथ चौकोर होते हैं वे गाँठदार जोड़ वाले लोगों की तुलना में कहीं अधिक गलतियां करते हैं।

नुकीले हाथ चिकने जोड़वाले शुद्ध रूप से अंतर्ज्ञान के द्योतक होते हैं। ऐसे व्यक्ति किसी प्रकार की विवेचना के चक्कर में नहीं पड़ते। ऐसे लोग अपने लिबास के बारे में भी लापरवाह होते हैं, वे छोटी छोटी बातों की ओर ध्यान नहीं देते।

गांठदार जोड़ वाले मामलों में इसका विपरीत यह देखने को मिलता है। इन आकारों के घटाव बढ़ाव से कार्य की क्षमता में कोई अंतर नहीं आता। चिकने जोड़ उन लोगों में देखने को मिलते हैं, जो अधिक शारीरिक परिश्रम करते हैं। इसी प्रकार के गाँठदार एवं उन्नत जोड़ उन लोगों में देखने को मिलता है जो मानसिक कार्य अधिक करते हैं। ऐसे हाथ एक ही परिवार में कई पीढ़ियों से चलते रहते हैं।

क्योंकि गाँठदार अथवा उन्नत जोड़ चिकने जोड़ के विपरीत होते हैं, इसलिए ऐसे जोड़ वाले प्राणी कार्य एवं उसकी यथार्थ प्रणाली में अधिक से अधिक यायार्थ का प्रदर्शन करते हैं।

इस विषय में चौकोर हाथ एवं गांठदार हाथ वाला जो वैज्ञानिक नई-नई खोजों में लगा होता है, उसके विस्तृत विश्लेषण में उसे कितना समय लगेगा, ठीक यही कारण है कि दार्शनक हाथों वाले अपने कामों की गहराई तथा यथार्थ में जाते हैं।

## निःसंतान लक्षण

1. स्वास्थ्य रेखा पर नक्षत्र 2. अनामिका के तीसरे पर्व पर नक्षत्र 3. हृदय रेखा में बुध पर्वत के नीचे शाखाएं न हों, 4. हृदय रेखा गुरु पर्वत पर चौड़ी हो और हाथ से बाहर निकलते वक्त पतली हो, 5. मस्तिष्क रेखा और स्वास्थ्य रेखा के मिलन पर तारा हो, 6. बुध रेखा के नीचे हृदय रेखा पर शाखा न होने से निःसंतान।



## मानव अंगुलियां और उनका फल

अंगुलियां बड़ी हो या छोटी, हथेली की लम्बाई से उनका कोई सम्बन्ध नहीं होता।

लम्बी अंगुलियों वाले हर चीज को विस्तार से जानने की इच्छा रखते हैं भले ही कमरे की सजावट हो या नौकरों का व्यवहार हर चीज में वे सफाई पसंद करते हैं। लम्बी अंगुलियों वाले हर चीज को विस्तार से जानने की इच्छा रखते हैं। वे छोटी-छोटी बातों को लेकर अपने मन पर बोझ नहीं डालते और बातचीत में बड़े ही मुँहफट होते हैं।

मोटी, भद्दी तथा छोटी अंगुलियों वाले लोग बहुत ही स्वार्थी और धोखबाज होते हैं। उनकी किसी बात का विश्वास नहीं करना चाहिए।
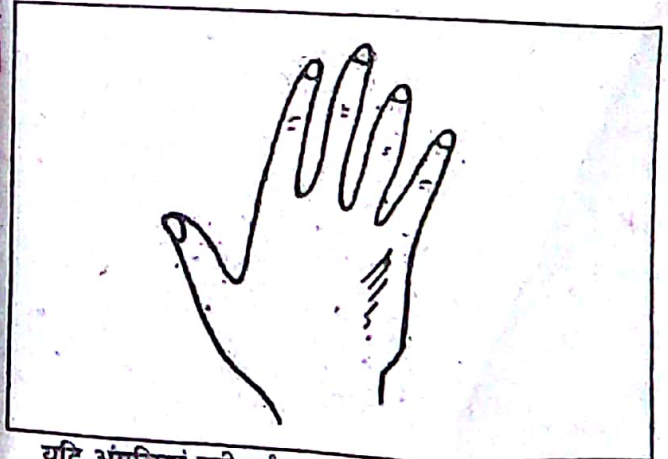
यदि अंगुलियां तनी हुई अन्दर की ओर झुकी हुई हों तो ऐसे लोगों का विश्वास समाज में कोई नहीं करेगा। देखे चित्र, इसमें आप को तीन प्रकार के हाथों की अंगुलियों के चित्र अलग-अलग दिखाए जा रहे हैं।

इस चित्र में आपको चपटी अंगुलियों वाले लोगों का हाथ दिखाया गया है। इसके विषय में पूरी जानकारी तो इस पुस्तक

में दी जा रही है, शेष जानकारी के लिए आपको हाथों की अंगुलियों की बनावट को देख कर अपनी बुद्धि से ही सोच सकते हो । पुस्तक में तो केवल आप को मार्ग ही दिखाया जा सकता है ।

यदि किसी हाथ की अंगुलियां लचीली और पीछे की ओर झुकी हुई हों, ऐसे लोग समाजसेवी होते हैं । स्वभाव के भी अच्छे होते हैं जिसके कारण सब लोग उन्हें प्यार करते हैं ।

यदि अंगुली के अग्र भाग के अंदर भी गोलगद्दी जैसी हो तो ऐसे व्यक्ति अत्यंत संवेदनशील होते हैं, और किसी का बुरा करना तो दूर की बात, सोच भी नहीं सकते ।

यदि अंगुलियां जड़ों में मोटी और गुदगुदी हो तो ऐसे प्राणी दूसरे से अधिक अपने आराम एवं सुविधा को महत्व देते हैं । उन्हें जीवन के हर सुख की आवश्यकता महसूस होती है । देखें चित्र, में एक ऐसे ही हाथ का चित्र आपको दिखाया जा रहा है ।

यदि अंगुलियों को खोलने पर प्रथम और द्वितीय अंगुली के बीच में अधिक स्थान दिखाई दे तो यह विचारों की स्वतंत्रता का द्योतक होता है । यदि ऐसा स्थान तीसरी और चौथी अंगुली के बीच में हो तो यह कार्य की स्वतंत्रता का परिचायक होता है ।
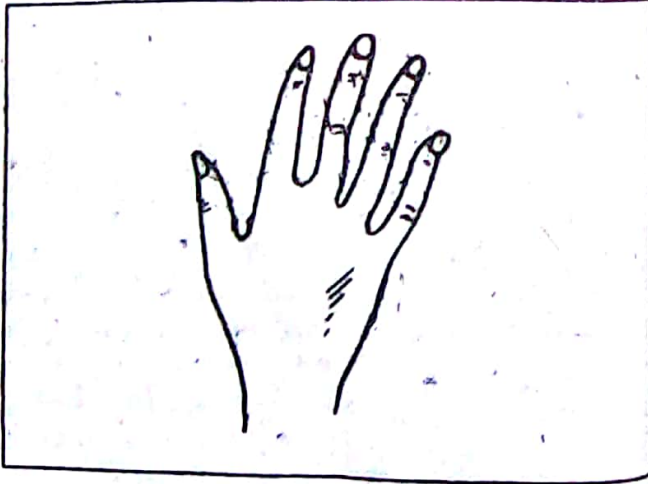
कुछ हाथों में प्रथम अंगुली बहुत छोटी होती है और कुछ यह दूसरी अंगुलियों के बराबर होती है । अन्य अंगुलियों के साथ भी ऐसे हो तो जब पहली अंगुली यानी तर्जनी बहुत अधिक लम्बी हो ऐसे प्राणी बहुत घमंडी, हुकूमत करने वाले और मालिक ही बनकर रहने वाले होते हैं । देखें चित्र को

यदि एक अंगुली तर्जनी : असाधारणरूप से लम्बी अथवा बीच वाली के बराबर हो तो, ऐसे व्यक्ति बड़े सिद्धांतवादी और आदर्शवादी होते है, किन्तु वे लोग किसी के अधीन होकर नहीं रह सकते बल्कि बहुत अच्छे प्रशासक होते हैं । विश्व विजेता नेपोलियन ऐसे ही हाथ वाला व्यक्ति था ।

यदि दूसरी यानी शनि की अंगुली चकौर या भारी हो तो लोग बहुत अधिक विचारशील और धैर्यवान होते हैं । यदि नुकीली हो तो उनके विचारों में चिड़चिड़ापन और जिद्दी भावना पैदा हो सकती है ।
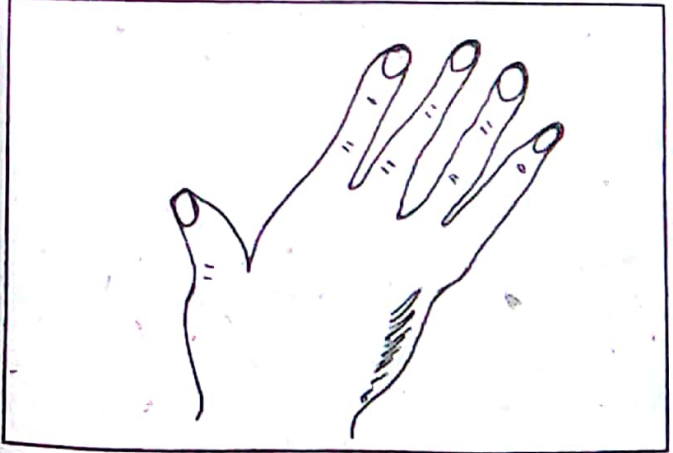
**यदि तीसरी सूर्य की अंगुली तर्जनी के बराबर लम्बी हो तो ऐसे लोग अपनी कलात्मक प्रवृति के द्वारा धन एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने के महत्वाकांक्षी होते हैं । उनमें प्रसिद्धि पाने की उत्कट अभिलाषा होती है । यदि यह अधिक बड़ी हो और मध्यमा के**

बराबर हो जाए तो ऐसे प्राणी जीवन को एक लॉटरी से अधिक नहीं समझते ।

यदि वह तीसरी अंगुली अनामिका अच्छे आकार की, लम्बी होती है और वह हाथ में अंगूठे से संतुलन स्थापित करती हो तो ऐसे लोग अभिनेता, नेता, वक्ता अथवा उपदेशक होते हैं । अपने चाहने वालों का मन प्रसन्न करने की कला वे लोग खुब जानते हैं।

यदि छोटी अंगुली कनिष्ठिका अच्छे आकार की एवं लम्बी होती है और वह हाथ में अंगूठे से संतुलन प्राप्त करती है, तो ऐसे लोग दूसरे लोगों को काफी प्रभावित करने में सफल होते हैं ।

यदि वह अंगुली इतनी लम्बी हो कि अनामिका के नाखुन तक जा पहुंचे तो ऐसा व्यक्ति भाषण तथा लेखन में सिद्धहस्त तथा थोड़ा बहुत दार्शनिक भी होता है, जा हर विषय पर बोलकर विजय प्राप्त कर सकता है । ऐसे लोग कभी हार का मुंह नहीं देखते ।

## हथेली-

हथेली का भी हमारे भाग्य से बड़ा गहरा सम्बन्ध है, सच बात तो यह है मानव हथेली एक ऐसी धरती है जहाँ से इन्सान के भाग्य की फसल पैदा होती है । इसका ज्ञान इतना सरल भी नहीं जितना बाजारी ज्योतिष, बिना किसी ज्योतिष ज्ञान के ही लोगों को पागल बनाने के लिए सयझ बैठे । वास्तव में हमारे देश में कुछ अज्ञानी लोगों के कारण ही ज्योतिष जैसी विद्या भी बदनाम हो रही है । कितने दुख की बात है यह, पाठकों से भी मैं यही प्रार्थना करूँगा कि वे ज्योतिष विद्या को बदनाम न होने दे । आओ आगे बढ़ते हुए मैं आपको, कीरो जी कि नजरों में हस्त रेखा ज्ञान, के विषय में बताता हूँ :

हथेली : पतली, सुखी, संकीर्ण, शीघ्रता कराने वाले एवं चिंतित स्वभाव का द्योतक होती है । मोटी भरी हुई तथा कोमल हथेली वाले लोग वासना के पुजारी होते हैं । हथेली यदि दृढ़ तथा अंगुलियों के अनूरूप होती है तो वह मस्तिष्क की एकरूपता, स्फूर्ति, ऊर्जा एवं बुद्धि की तीव्रता की ओर संकेत देती है ।



जिन प्राणियों की हथेलियां अधिक मोटी नहीं होती तथा कोमल एवं गुदगुदी होती है, तो ऐसे लोग ढीले, सुस्त और वासना की ओर अधिक ध्यान देने वाले होते हैं । जिन लोगों की हथेलियों में गड्ढा होता है वे लोग भाग्यशाली नहीं होते । ऐसे लोगों में निराशा की भावना अधिक होती है । जीवन में आगे बढ़ने की बात लोग सोचते ही नहीं ।

यदि यह गड्ढा जीवन रेखा के ऊपर हो तो वह घरेलू जीवन में निराशा तथा चिंता पैदा करने का प्रतीक है ।

यदि यह गड्ढा भाग्य रेखा के ऊपर आता हो तो इसका अर्थ है कि घरेलू जीवन में चिंता और सांसारिक कार्यों में असफलता ।

## बड़े और छोटे हाथ

ध्यान देने की बात तो यह है कि आमतौर पर यह कहा जाता है कि बड़े हाथों वाले प्राणी अच्छे अच्छे काम करते हैं तथा कार्य में विश्लेषण को पसंद करते हैं, जबकि छोट हाथ वाले प्राणी बड़ी चीजों को मांगते हैं और रोजगार में कोई विघ्न सहन नहीं कर सकते, इस विषय में मैं आपको एक घटना के बारे में सुनाता हूँ ।

एक बार मैं पटना में एक सुनार की दुकान पर गया तो वहाँ पर हीरों को जड़ने वाले तथा मीनाकारी का काम करने वाले लोगों के हाथ देखते तो मुझे इन बहुत से लोगों के हाथों में इस नियम का विरोधी या अपवाद नहीं मिला, हाँ एक आदमी के हाथ सामान्य हाथों से बड़े थे, परन्तु वह भी अपने काम के लिए बहुत प्रसिद्ध था ।

इसके विपरीत छोटे हाथ वाले लोगों के हाथ बड़े विचारों को पूरा करते हैं, अपनी पहुँच से बाहर की योजनायें बनाते हैं, ये

बहुत ऊँचा उड़ना चाहते हैं । आमतौर पर यही कहा जाता है कि ऐसे हाथ कलाकारों के होते हैं । कवियों, लेखकों, चित्रकारों के हाथ ऐसे ही मिलेंगे ।

हाथ से हाथ का ज्ञान मिलता है । हाथ की लकीरें ही भविष्य के बारे में बताती हैं ।

## नाखुन

जहां तक हम प्राणियों के स्वास्थ्य और बीमारियों के बारे में जानने की बात सोचते हैं, तो इस के लिए नाखुन एक अच्छे पथ प्रदर्शक का काम करते हैं । बड़े-बड़े डॉक्टर नाखुनों से ही रोगी के बारे में बहुत कुछ जान लेते हैं ।

सबसे पहले नाखुनों की देख-भाल उनके आकार प्रकार से जरा भर भी परिवर्तन नहीं करती क्योंकि प्रकृति ने जो आकार उनका बना दिया है उसे बदला नहीं जा सकता ।

ज्योतिष विद्या के आधार पर हम नाखुनों को चार भागों में बाँट सकते हैं । देखें चित्र को, इस में अलग-अलग प्रकार के नाखुन दिए गए हैं;

1. लम्बे 2. छोटे
3. चौड़े 4. संकरे

जिनका विरण इस प्रकार है :

## लम्बे नाखुन

लम्बे नाखुन शारिरिक वैसे द्योतक नहीं होते जैसे की छोटे और चौड़े नाखुन होते हैं । छाती तथा फेफडों के रोगों के शिकार होते है। । यह बात तब और भी ठीक होती है जबकि नाखुन थोड़े-थोड़े चारों ओर झुके हुए हों, यदि ये नाखुन धारीदार हों तो और भी भाग्यशाली होते हैं ।

लम्बे नाखुन यदि सिरे पर चौड़े एक कुछ नीलापन लिए हुए हों तो वे बीमारी का निशानी मानी जाती है, ऐसे मामले अधिकतर चौदह से इक्कीस वर्ष एवं चौवालीस से सैंतालीस वर्ष तक की औरतों में अधिक पाए जाते हैं ।

## छोटे नाखुन

हृदय रोगों के शिकार लोगों के परिवारों में अक्सर छोटे ही नाखुन होते हैं । यदि मूल स्थान में पतले एवं चपटे हों और उनमें एक भी बड़े चन्द्राकार अच्छे रक्त संचारण के प्रतीक होते हैं । देखें चित्र में जो कई प्रकार के नाखुनों के चित्र आपके सामने हैं ।

यदि छोटे नाखुन चपटे हों एवं किनारों पर मुड़ रहे हों अथवा ऊपर कि ओर उठ रहे हों, उन्हें पक्षाघात रोग का पूर्व संकेत मानना चाहिए ।

छोटे नाखुनों वालों में लम्बे नाखुन वालों की अपेक्षा हृदय रोगों की तथा धड़ से नीचे के अंगों पर प्रभाव डालने वाले रोगों से ग्रस्त रहते हैं ।

यदि नाखुनों पर प्राकृतिक धब्बे हों तो ऐसे लोग बहुत जल्दी ही घबरा जाते हैं, यदि उनके नाखुन धब्बों से भरे पड़े हों तो उनके सम्पूर्ण स्नायु तंत्र की जांच एवं चिकित्सा कराना आवश्यक होता है ।

छोटे एवं पतले नाखुन, कमजोर स्वास्थ्य एवं ऊर्जा की कमी की ओर संकेत करते हैं । नाखुन यदि संकरे लम्बे ऊपर की ओर उठे हुए तथा मुड़े हुए हों तो वे रीढ़ की हड्डी के रोग के द्योतक होते हैं । ऐसे नाखुनों वाले लोग कभी भी अच्छे स्वास्थ्य नहीं हो सकते ।

## हाथों पर बाल

यदि हस्त विज्ञान के किसी प्रतिवादक को पर्दे के पीछे बैठे किसी प्राणी का हाथ देखना पड़े तो हाथों पर उगे हुए बाल वैसे तो कोई खास नहीं लगते, परन्तु यदि इन्हें ज्योतिष की दृष्टि से देखा जाए तो ये बहुत ही विशेष होते हैं । यह ज्ञान होना भी अति आवश्यक है कि ये बाल किन नियमों से नियंत्रित होकर उगते हैं ।

यही नहीं इन बालों के रंगों के बारे में भी जानना जरूरी है इसलिए बालों का ज्ञान जाने के लिए हमें अलग अलग से उनका विश्लेषण करना होगा ।

सबसे पहले यह जान लें कि बाल एक बारीक टयूब की भांति होता है, यह प्राकृतिक त्वचा की शिराओं अथवा नाड़ियों से संबंध रखते हैं, यह बाल और टयूब शरीर की ऊर्जा को बाहर निकालने का कार्य करते हैं । रंग के द्वारा ही यह ऊर्जा आगे बढ़ती है इसके बारे में ज्योतिष के विद्यार्थियों को जान लेना जरूरी है कि इसमे मानव के स्वभाव पर भी प्रभाव पड़ता है । उदाहरण के लिए यदि शरीर की व्यवस्था में लोहा या लाल रक्त कणिकाएं हों तो बालों से गुजरता हुआ शरीर का विद्युत प्रवाह उन्हें बालों से भर देगा तथा बालों के रंग को काला, सुनहरी, भूरा या सफेद बना देगा ।



सफेद या हल्के रंग के बालों वाले लोगों के अन्दर लोहे की कमी होती है । एक नियमानुसार ये निस्तेज निरुत्साही एवं नम्र होते हैं तथा काले बाल वाले की अपेक्षा अपने आस पास से कहीं अधिक प्रभावित होते हैं ।

बहुत अधिक काले बालों वाले लोग यद्यपि कार्य कम स्फूर्ति वाले होते हैं तथापि क्रोधी और चिड़चिड़ स्वभाव के होते हैं ।

सफेद बाल वालों की अपेक्षा स्नेह प्रेम के मामले में अधिक स्फूर्तिवान होते है। । लाल रंग के बाल सफेद या काले बालों से एकदम विरोधी होते हैं यदि इन बालों का परीक्षण करें तो पायेंगे कि लाल रंग के बाल काले भूरे या सुनहरे बालो की अपेक्षा अधिक कड़े होते हैं । ये अधिक रूखें तथा मोटे हैं इसलिए इनके द्वारा विद्युत प्रवाह की मात्रा भी अधिक होती है बल्कि इसीलिए ये अधिक उत्तेजित होते हैं ।

जब शरीर की व्यवस्था नशे की आदत के कारण नष्ट हो जाती है तो शारीरिक ऊर्जा उतनी मात्रा में नहीं बनती जितनी मात्रा से बननी चाहिए । वह शारीरिक व्यवस्था में खर्च हो जाती है ।

सफेद बालों का एक कारण यह भी होता है कि वे टयूब रंग वाले बालों का जाना बन्द हो जाता है जिससे बालों के सिरे सफेद हो जाते हैं ।

कई बार शोक और चिन्ता के कारण भी बाल सफेद हो जाते हैं । एक बार जो बाल सफेद हो गया उसका काला होना बहुत ही कठिन होता है ।

## मानव हाथ और ग्रह क्षेत्र

हर प्राणी का हाथ अपने ग्रह क्षेत्र के साथ ही उसके भाग्य का निर्णय करता है । प्राणी की हस्त रेखाएं जो देखने में तो बहुत साधारण लगती हैं किन्तु यदि ज्योतिष विद्या की दृष्टि से देखा जाये तो उन रेखाओं में तो प्राणी का सारा भविष्य छिपा हुआ है । देखें चित्र में एक हाथ का चित्र दिया गया है उसकी रेखाएं आपके लिए भले ही साधारण लगती हैं किन्तु मैं जानता हूं कि
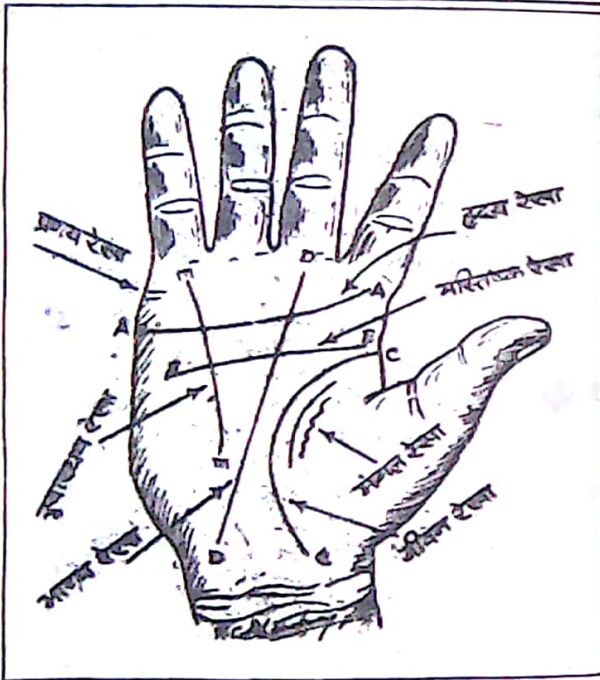
ये रेखाएं भविष्य की मुंह बोलती तस्वीर हैं यही अतीत बन जाती है, कभी-कभी वर्तमान की कहानी सुनाती हैं और भविष्य की कहानी हमारे सामने रखती है ।

हथेली की रेखाओ के हाथ का पिछला ग्रह क्षेत्र या पर्वत प्रजातियों एवं जातियों के सन्दर्भ में यह तुलना में उत्तरी देशों के ग्रह क्षेत्रों से अधिक ध्यान देने योग्य होते हैं । यही इनकी विशेषता रही है किन्तु अब इनका ज्ञान मैं आपके सामने रखता हूँ जिसे हर आदमी समझ सकेगा ।



हाथ के इन पर्वतों के नाम भी उन्हीं प्रमुख ग्रहों के नाम पर रखे गये हैं वही ग्रह हमारे भाग्य का निर्णय करते हैं ये ग्रह हैं: सूर्य, चन्द्र, शुक्र, बुध, मंगल, वृहस्पति और शनि ।

इन पर्वतों के नाम इसी अध्ययन के ग्रीक विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के गुणों के आधार पर दिये गये हैं ।

## शुक्र

इस ग्रह का सम्बन्ध इन्द्रियजनित सुख एवं वासना से जुड़ा हुआ है ।

## मंगल

मंगल ग्रह जीवन शक्ति, साहस, युद्ध इत्यादि का प्रतीक माना जाता है ।

## बुध

बुध ग्रह का संबंध मानसिकता, वाणिज्य एवं विज्ञान से है ।

## चन्द्र

चन्द्र देवता एवं ग्रह का संबंध कल्पना, प्रेम की अभिलाषा और परिवर्तनशीलता से जुड़ा हुआ है ।

## सूर्य

सूर्य का अर्थ है प्रकाश और सूर्य के इस प्रकाश से मानव जीवन बंधा हुआ है । सूर्य ग्रह बुद्धि, फल प्राप्त करना और सफलता का प्रतीक है ।

## बृहस्पति

बृहस्पति गुरू ग्रह है इसका अर्थ है आकांक्षा तथा दूसरों पर शासन करना । अधिक लम्बी हो तो दबंग, निडर, तानाशाही हुकुमत चाहना ।

## शनि

वैसे तो शनि ग्रह का नाम सुनते ही लोग डरने लगते हैं । शनि ग्रह का अर्थ है दुःख, संकट, चिन्ता एवं गम्भीरता ।

ये सारे ग्रह राशिमण्डल को करीब सोलह डिग्री चौड़ा ब्रहमांड का रास्ता बताया गया है जिसमें यह सबके सब ग्रह घूमते रहते हैं । यह बारह राशियों में बंटे रहते हैं हर राशि तीस डिग्री की होती है । और यह सूर्य तीस दिन के पश्चात दूसरी राशि में प्रवेश करता है । बारह मास के पश्चात यह 360 डिग्री के राशिमण्डल अथवा एक और वर्ष को पूरा करता है ।

सूर्य के विषय में आपको पहले भी बताया गया है कि यह हमारे जीवन का निर्माता है । ब्रह्मांड का सबसे बड़ा रहस्य भी है । पृथ्वी से 330,000 गुना बड़ा है इसलिए इसका प्रकाश पृथ्वी पर हर समय पड़ता रहता है अतः यह बात आसानी से समझी जा सकती है कि किसी एक प्राणी का जनम किस मास में हुआ है । हर मास में जन्म के साथ उनकी अपनी विशेषताएं जुड़ी हुई हैं । यही इनके भाग्य को भी अलग-अलग करते हैं ।

## मंगल

मंगल के पर्वत की हथेली पर दो स्थितियां होती हैं । इसमें पहला पर्वत जीवन रेखा के ऊपरी भाग के ठीक नीचे तथा दूसरा इससे विपरीत हृदय रेखा या मस्तिष्क रेखा के बीच वाले स्थान पर पाया जाता है । इनमें प्रथम शारीरिक विशेषता एवं द्वितीय मानसिकता को दर्शाता है ।

यदि प्रथम पर्वत खड़ा हो तो सकारात्मक होता है और यह उस दशा में अधिक महत्वपूर्ण होता है जब कोई प्राणी 21 मार्च 21 अप्रैल तक या इससे अधिक 28 अप्रैल के बीच में पैदा हुआ हो क्योंकि वर्ष का यह भाग राशि मण्डल में मंगल का सकारात्मक क्षेत्र माना जाता है ।

दूसरे भाग को नकारात्मक कहा गया है यह तब महत्वपूर्ण होता है, जिस प्राणी का जन्म 21 अक्टुबर से 21 नवम्बर या इससे अधिक 28 नवम्बर तक हुआ हो क्योंकि वर्ष का यह भाग राशि चक्र में मंगल ग्रह का नकारात्मक क्षेत्र माना जाता है ।

जब हम इन दो स्थितियों में अन्तर का विचार करेंगे कि वह मान तथा स्वभाव पर कैसे प्रभाव डालते हैं उनका स्वास्थ्य की प्रवृति से क्या संबंध हो सकता है, इसे भी ज्ञात करेंगे ।



## मंगल का पहला पर्वत

मंगल के पर्वत की हथेली पर दो स्थितियाँ होती है । इसमें पहला पर्वत जीवन रेखा के ऊपरी भाग के ठीक नीचे तथा दूसरा इससे विपरीत हृदय रेखा या मस्तिष्क रेखा के बीच वाले स्थान पर पाया जाता है । इनमें प्रथम पर्वत शारीरिक विशेषता एवं द्वितीय मानसिकता को दर्शाता है ।

यदि प्रथम पर्वत खड़ा हो तो सकारात्मक होता है और यह उस दशा में अधिक महत्वपूर्ण होता है । जब कोई प्राणी 21 मार्च मे 21 अप्रैल तक या इससे अधिक 28 अप्रैल के बीच पैदा हुआ हो क्योंकि वर्ष का यह भाग राशि मण्डल में मंगल का सकारात्मक क्षेत्र माना जाता है ।

दूसरे भाग को नकारात्मक कहा गया है यह तब महत्वपूर्ण होता है, जिस प्राणी का जन्म 21 अक्टुबर से 21 नवम्बर या इससे अधिक 28 नवम्बर तक हुआ हो क्योंकि वर्ष का यह भाग राशि चक्र में मंगल ग्रह का नकारात्मक क्षेत्र माना जाता है ।

जब हम इन दो स्थितियों में अन्तर का विचार करेंगे कि वह मन तथा स्वभाव पर कैसे प्रभाव डालते हैं उनका स्वास्थ्य की प्रवृति से क्या संबंध हो सकता है, इसे भी ज्ञात करेगें ।

## मंगल का पहला पर्वत

मंगल का पहला पर्वत जीवन रेखा के पास ही होता है । जब प्राणी मंगल के इस क्षेत्र में 21 मार्च से 21 अप्रैल तक या अधिक से अधिक 28 अप्रैल तक जन्म लेता है तो उसका स्वभाव शक्तिशाली एवं लड़ाकू होता है । उसमें उद्देश्य एवं निश्चय की दृढ़ता होती है वे सभी आलोचनाओं का उत्तर देते हैं परन्तु वे रूढ़िवादी होते हैं दूसरों की सलाह बहुत कम मानते हैं मनमानी करने में ही उन्हें आनन्द आता है उन्हें केवल प्यार से ही अपने काबू में किया जा सकात है ।

वैसे ज्योतिष विज्ञान की दृष्टि से ऐसे लोग बहुत ही मिलनसार होते हैं उनमें धैर्य की कमी और भावुकता अधिक होती है । उनके

मन में कुछ नहीं होता ऐसे लोगों को नशे की हर चीज से दूर रहना चाहिए । नशा करने से उन्हें कष्ट ही कष्ट है ।

## मंगल का दूसरा पर्वत

हृदय रेखा और मस्तिष्क रेखा के बीच के स्थान को कहते हैं । यह उस समय और भी महत्वपूर्ण होता है जब कोई प्राणी 21 अक्टूबर से 21 नवम्बर या अधिक से अधिक 28 नवम्बर तक पैदा हुआ हो । राशिमण्डल में वर्ष के इस भाग को मंगल का नकारात्मक क्षेत्र माना जाता है ।

जिन प्राणियों के हाथों में यह क्षेत्र उन्नत होता है वे स्वभाव या चरित्र में पहले प्रकार से बिल्कुल ही अलग होते हैं उनके मस्तिष्क में मंगल के सारे गुण भरे रहते हैं वो मानसिक रूप से काफी साहसी होते हैं उनमें शरीर के बजाय नैतिक एवं मानसिक साहस अधिक होता है ।

अधिक विकसित बुद्धि न होने के कारण आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने के लिए कुछ भी कर सकते हैं ।

## बृहस्पति का पर्वत क्या है

यह क्षेत्र या उभार प्रथम अंगुली के मूल में पाया जाता है यदि यह बड़ा हो तो शासन करने की भावना पैदा होती है नेतृत्व की व्यवस्था की और किसी विशेष उद्देश्यों की प्राप्ति की आशा जन्म लेती है किन्तु इन सब भावनाओं की पूर्ति तभी होती है जब मस्तिष्क रेखा लम्बी एवं स्पष्ट हो यदि यह रेखा पतली या खराब आकार कहीं से टूटी फूटी हो तो ऐसे हाथ वाले लोग काफी घमंडी अपनी ही इच्छा से काम करने वाले होते हैं । यदि इसमें कोई खास उभार न हो तो इन्हें साधारण ही कहा जाएगा ।

इस पर्वत के उभार को तब सकारात्मक माना जाता है जब प्राणी 21 नवम्बर से 28 दिसम्बर के बीच में पैदा हुआ हो । ऐसे लोग बड़े बहादुर और अपने कामों में बड़े दृढ़ निश्चयी होते हैं वे लोग अपना पूरा ध्यान अपने काम की ओर लगा देते हैं । सिद्धान्तवादी होने के कारण कभी-कभी गलत लोगों से धोखा भी खा जाते हैं ।



बृहस्पति के उस उभार को नकारात्मक भी कहा जाता है जब कोई 19 फरवरी से 20 मार्च या अधिक से अधिक 28 मार्च तक पैदा हुआ हो । ऐसे उभार वाले लोग सारे विषयों की साधारण जानकारी रखते हैं । ज्योतिष, इतिहास, भौगोलिक विषयों में इनकी रूचि सबसे अधिक रहती है । ऐसे लोगों में आत्मविश्वास तो कूट कूटकर भरा होता है ।

तर्जनी के नीचे बृहस्पति पर्वत होता है । इसके न होने से नीच मनोवृति जाहिर होती है ज्यादा उभार होने से चापलूसी, घमंड और प्रशंसा स्वयं करने वाला व्यक्ति होता है ।

## शनि पर्वत का अर्थ

यह पर्वत दूसरी अंगुली अर्थात मध्य के मूल में पाया जाता है इसकी विशेषता एकांतप्रियता, दूरदर्शिता और गंभीर विषयों का अध्ययन एवं भाग्यवाद में आस्था, निराशा, एकान्तप्रियता एवं बुद्धिमानी का सूचक है ।

इस पर्वत की सर्वथा अनुपस्थिति प्राणी के स्वभाव तथा इसका अधिक उभार उन सारे गुणों की अधिकता की ओर संकेत करता है जो इसके अन्दर है । क्रॉस भाग्य रेखा के पास हो तो किसी दुर्घटना की सम्भावना रहती है ।

शनि के उभार को अच्छा तब माना जाता है जब किसी प्राणी का जन्म 21 दिसम्बर से 27 जनवरी के बीच में हुआ हो । इन तिथियों में जन्म लेने वाले प्राणी अपनी इच्छाशक्ति और मानसिक शक्ति की तीव्रता के लिए काफी प्रसिद्ध होते हैं, किन्तु इस पर भी वे अपने आप को अलग थलग महसूस करते हैं । इनके अन्दर सहानुभूति और दया की भावना हाती है जीवन की हर जिम्मेदारी को खुशी से निभाते हैं ।

## शनि पर्वत का नकारात्मक चित्र

शनि पर्वत को अशुभ अथवा मानसिक तब समझा जा सकता है जब किसी प्राणी का जन्म 21 जनवरी से 18 फरवरी के मध्य या आगामी सात दिनों के अन्दर हुआ हो ।

ऐसे लोग हर बात में भाषण देना आरम्भ कर देते हैं । ऐसे लोग बहुत संवेदनशील होते हैं और भावुक भी बहुत होते हैं इनके मित्र बहुत वफादार होते है ये लोग अपने मित्रों पर जान दे सकते हैं तथा कला प्रेमी होते हैं ।

## सूर्य पर्वत

सूर्य पर्वत तीसरी अंगुली या अनामिका के मूल में पाया जाता है । ग्रीक ज्योतिष में इसे अपोलो पर्वत भी कहा जाता है ।

बड़ा एवं सुविकसित होने पर यह गरिमा, आभा, प्रसिद्धि तथा अपने साथियों के समक्ष चमकने की इच्छा प्रकट करता है । यह ही एक पर्वत है जो बड़ा होने पर शुभ माना जाता है ।

ऐसे लोगों का झुकाव कला की ओर होता है, वह सभी चीजों में सुन्दरता की ओर झुकाव का संकेत करते हैं । यह पर्वत यदि अधिक बड़ा हो तो ऐसे लोग बहुत खर्चीले होते हैं । ऐसे लोग बड़ी मौज-मस्ती करने वाले, दिल बहलाने वाले होते हैं । उनमें चरित्र एवं व्यक्तित्व की ताकत होती है । व्यक्ति सामाजिक कार्यों में रूचि लेता है । अपनी प्रतिष्ठा बनाता है ।

## बुध का पर्वत

यह देवताओं का समाचार वाहक है । यह पर्वत चौथी अंगुली कनिष्ठका के मूल में पाया जाता है यदि हाथ अच्छा हो तो इस पर्वत का प्रभाव अच्छा होता है और हाथ में खराब मानसिक प्रवृति का संकेत मिलता हो तो यह इनकी बुराइयों को और भी अधिक बढ़ा देता है । यह अन्य चीजों से अधिक मस्तिष्क से सम्बन्ध रखता है । यह मस्तिष्क, बुद्धि, विचार और ज्ञान की वृद्धि करता है । बुध पर्वत पर एक रेखा अचानक धन प्राप्ति कराती है । गोल वृत में जहर द्वारा मृत्यु का संकेत कराता है । काला धब्बा शरीर को अस्वस्थ करता है । यह ज्ञान विज्ञान एवं वाणिज्य की क्षमा भी देती है परन्तु यदि खराब स्थिति में हो तो मानसिक उत्तेजना शीघ्र घबराने की आदत, एकाग्रता की कमी



तथा व्यवसाय में धोखेबाज बनाता है ।

इस पर्वत के सम्बन्ध में हाथ में पायी जाने वाली मस्तक रेखा की स्थिति के आधार पर विचार किया जाना चाहिए ।

यदि मस्तक रेखा बड़ी एवं सुविकसित हो तो यह मानसिक क्षमता एवं सफलता की सम्भावनाओं को बढ़ा देता है परन्तु यह रेखा कमजोर खराब आकार की एवं अनियमित हो तो इसके सभी परिणाम कमजोर एवं खराब होते हैं ।

## बुध का पर्वत सकारात्मक पक्ष

प्राणी का जन्म 21 मई से 27 जून के बीच में हुआ हो । इस अवधि मे जन्म ले वाल लोग राशिमंडल में युगल 'मिथुन' के रूप में जाने जाते हैं । यह एक चौंका देने वाली बात है कि इस अवधि में जन्म लेने वाले व्यक्तियों का स्वभाव एक चरित्र भी युग्म होता है, उनके प्रकृति तथा चरित्र का एक पहलू दूसरे पहलू का बिल्कुल विरोधी नजर आता है तथा अच्छी बुद्धि होते हुए भी ऐसे लोग अपने उद्देश्य में एकाग्रता की कमी के कारण जिंदगी खराब कर लेते हैं जो कुछ वे सोचते हैं अथवा करना चाहते हैं । ऐसी बात का पक्का प्रोग्राम उनके दिमाग में नहीं होता वे कभी भी अपनी योजनाओं को दृढ़ता से पूरा नहीं कर पाते ।

एसे लोगों को समझाना बड़ा कठिन है उनका स्वभाव एक ही समय में क्रोध वाला और शांत होता है । अपने ही स्वभाव के कारण वे एक पल में प्यार दूसरे पल घृणा करते हैं ।

काम काज के मामले में वे अपने सारे साथियों से आगे निकल जाते हैं ।

## बुध का नकारात्मक, अशुभ पक्ष

इस पर्वत को अशुभ पक्ष समझने के लिए उन लोगों के नाम ऊपर हैं । 21 अगस्त से 27 सितम्बर तक पैदा हुए हैं इस अवधि में जन्म लेने वाले प्राणी अति भौतिकवादी और व्यवहारिक होते हैं ।

इस अवधि में जन्म लेने वाली महिलाएं विशेषतया जिज्ञासू

पहेली जैसी होती है । उनमें यदि अधिक गुण भी हों तो कई अवगुण भी हो सकते हैं, ये कभी कभी तो प्यार में बुरी तरह डूबी हुई, कभी घृणा की आग उगलती नजर आती है ।

## चन्द्र का पर्वत और उसका प्रभाव

चन्द्र पर्वत मस्तिष्क रेखा के अन्त के मूल में पाया जाता है । यह पर्वत उन सारे विषयों से सम्बन्ध रखता है जो कला, यात्रा आविष्कार प्यार एवं आदेशों से जुड़े हुए हैं ।

इस पर्वत को शुभ तब माना जा सकता है जब यह उच्च अथवा सुविकसित दिखाई देता है उस हालत में जब प्राणी का जन्म 21 जून से 27 जुलाई के बीच में हुआ हो ।

शुभ पर्वत वाले लोग शक्तिशाली होते है वे जो कुछ कहते हैं, कर दिखाते है, उन्हें स्वयं पर पूरा विश्वास रहता है । चन्द्र पर्वत के तीन भाग माने गये हैं । उसमें कविता, कल्पना, लेखन कला, यात्रा जय और मन का शक्तिशाली भाग इसी में होता है । बहुत सी लेटी रेखाएँ चिन्ताएँ बढ़ाती है और यव होने से व्यक्ति नीच व्यक्तियों की संगती करता है ।

## चन्द्र के पर्वत का प्रभाव

जब यह क्षेत्र हथेली पर उभरा होकर चपटा हो जाता है तो इसे नकारात्मक की संज्ञा देते हैं । जिस प्राणी का जन्म 21 जनवरी से लेकर 27 फरवरी के बीच हुआ हो, उनमें मानसिक शक्ति बहुत होती है परन्तु उनकी विचार शक्ति काफी कमजोर होती है उनकी बुद्धि बहुत तीव्र होती है वे सबके भले की बात सोचते हैं ।

## शुक्र का पर्वत और उसका प्रभाव

अंगूठे के मूल में तथा जीवन रेखा के अन्दर वाला भाग शुक्र पर्वत कहा जाता है । जब यह अच्छी बनावट का हो किन्तु अधिक बड़ा न हो तो यह प्रेम भवना की पूर्ति करने का अधिक इच्छुक होता है । इस प्रकार के पर्वत वाले लोग कला के प्रेमी होते हैं और साथ ही कलाकार भी बनने की योग्यता रखते हैं ।



जब यह पर्वत ऊंचा और बड़ा होता है तो सकारात्मक और छोटा एवं चपटा हो तो इसे अशुभ कहते हैं ।

यदि किसी प्राणी का पूरा हाथ सामान्य हो और शुक्र पर्वत अच्छे आकार का हो तो यह शुभ माना जाता है ।

यदि जन्म दिन के हिसाब से इस पर विचार किया जाये तो यह उन रहस्यों पर से भी पर्दा उठाता है जिनके बारे में आम आदमी को ज्ञान नहीं होता ।

विद्यार्थी लोग इसे तभी शुभ मान सकते हैं जब प्राणी का जन्म 20 अप्रैल से लेकर 27 मई के बीच में हुआ हो, एसे लोग बड़े धैर्यवान, दयालु, समाज सेवी मनोवृति वाले होते हैं ।

## शुक्र का पर्वत और उसका प्रभाव

इस पर्वत को अशुभ तक कहते हैं जब किसी प्राणी का जन्म 21 सितम्बर से 27 अक्टुबर के बीच में हुआ हो किन्तु इस बीच पैदा होने वाले लोगों का शुक्र क्षेत्र अधिक प्रभावी नहीं होता, सच तो यह है कि इन लोगों का प्रेम शुभ श्रेणी जैसा होता है । अक्सर लोग अपनी ही भूल के कारण अपने विवेकीय ज्ञान को नष्ट कर देते हैं । ऐसे लोग डॉक्टर, वकील और जज बन सकते हैं । अंगूठे के नीचे का भाग प्रेम, देशभक्ति, लगाव सुधार, काम, संगीत का सूचक है ।

## आदर्श हाथ

यह हाथ किसी देश या धर्म या जाति में सीमित नहीं है यह कभी अधिक व्यवहारिक बताया जाता है और कभी सबसे अधिक उत्साही । इनमें थोड़ा थोड़ा मिश्रण होता है ऐसे हाथ उस स्थान पर खड़े होते हैं जिसमें पांच तत्वों की बजाय सात तत्वों का प्रभाव पड़ता है । उनके विचार आम संसारी लोगों से मेल नहीं खाता उनका तो अपना अलग संसार होता है । वे न बिकते हैं, न खरीदे जाते हैं इस पर भी सबका भला चाहते हैं । उनकी जबान मीठी, कर्म शुभ, दिल साफ होता है ।

## हाथ का अध्ययन एवं हस्त रेखाएं

मानव का हाथ ही उसके भविष्य का दर्पण है परन्तु उसे समझने और देखने के लिए हमें ज्योतिष विज्ञान का सहारा लेना पड़ेगा मैंने इस पुस्तक के लिए विश्व के चारों कोनों से सूचनाएं इक्कठी की है इन सूचनाओं की नींव पर ही इस पुस्तक की रचना की है । थोड़ी सी जानकारी प्राप्त कर लेने पर हाथ देखने का नाटक न कीजिए । इस पुस्तक को पढ़कर आत्मविश्वास से काम कीजिए, पहले हस्त रेखा विज्ञ बनिये उसके बाद विशेषज्ञ ।

ज्योतिष को खेल मत समझें । राह चलते लोगों के हाथों का अध्ययन न करें । बिना किसी ज्ञान एवं परीक्षण के ज्योतिष पर पुस्तक लिखने न बैठ जाएं ऐसा करना तो अन्याय है ।

इस अध्ययन के साथ न्याय करते हुए मैंने अन्य लेखकों का अनुसरण नहीं करता । जो इस विषय को गहराई से नहीं लेते बस थोड़ा सा किसी पुस्तक में ज्योतिष ज्ञान के बारे में पढ़ा और लगे हाथ देखने अरे भाई भविष्य को जानना यह तो सबसे कठिन विद्या है । ज्योतिष के छात्रों को यह बात पता होनी चाहिए कि इतने जटिल विषय की स्पष्ट व्याख्या करने के लिए कितनी कठिनाइयां आती हैं ।

जैसे कि मैंने स्पष्ट कहा है कि जीवन रेखा का संबंध उन सब से होता है जो जीवन को प्रभावित करता है । ये प्रभाव जो इस पर शासन करते है। वे हैं जीवनशक्ति की श्रीणी, जीव की सामान्य लम्बाई एवं देश तथा जलवायु के महत्वपूर्ण परिवर्तन । मेरे हिसाब से मस्तक रेखा का संबंध उन सब बातों से है जिनका प्रभाव हमारी बौद्धिक एवं मानसिक क्षमता पर पड़ता है । इस प्रणाली को मैंने सदा सही और सामान्य पाया है और उन विद्वानों के अनुकूल पाया है जिनकी शिक्षा का हमने सदा सम्मान किया है । आओ पहले देखते हैं ।

## हाथ की रेखाओं को

**हर प्राणी के हाथ में सात प्रधान रेखाएं होती है–**



1. जीवन रेखा, आयु रेखा, जो शुक्र क्षेत्र को घेरे रखती है ।
2. मस्तक रेखा जो करतल के मध्य में एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाती है मस्तक रेखा सम्पूर्ण जीवन का कम्पास है ।
3. हृदय रेखा यह अंगुलियों के लिए मूल स्थान के नीचे मस्तक रेखा के समानान्तर चलती है ।
4. शुक्र मुद्रिका यह रेखा के ऊपर होती है तथा अधिकतर सूर्य तथा शनि क्षेत्रों को घेरे रहती है ।
5. स्वास्थ्य रेखा यह रेखा बुध क्षेत्र से आरंभ होती है और हाथ से नीचे की ओर चली जाती है ।
6. सूर्य रेखा यह हथेली के मध्य भाग से प्रारम्भ होकर हाथ से नीचे तक जाती है ।
7. भाग्य रेखा यह रेखा के मध्य में होती हुई मणिबन्ध से आरम्भ होकर शनि क्षेत्र तक जाती है ।

इनके साथ ही सहयोगी रेखाएं इस प्रकार है :

1. मंगल रेखा- यह प्रथम मंगल क्षेत्र से आरम्भ होकर जीवन रेखा के अन्दर के भाग तक जाती है ।
2. वासना रेखा- यह स्वास्थ्य रेखा के समानान्तर रहती है
3. अतेनिद्रय रेखा- एक अर्ध वृत के रूप में बुध क्षेत्र से आरम्भ होकर चन्द्र क्षेत्र तक जाती है ।
4. विवाह रेखा-यदि जीवन साथी का मिलना, यह रेखा बुध क्षेत्र पर एक छोटी आड़ी रेखा के रूप में होती है ।
5. तीन मणिबंद रेखाएं- ये मणिबंद पर ही होती है ।

इनके अतिरिक्त कुछ रेखाएं इस प्रकार है :

1. जीवन रेखा को शक्ति रेखा भी कहा जाता है ।
2. मस्तिष्क रेखा को प्राकृतिक एवं प्रशंसा रेखा भी कहा जाता है ।
3. हृदय रेखा को अर्तव रेखा भी कहते हैं ।
4. भाग्य रेखा को प्रारब्ध रेखा भी कहते हैं ।
5. सूर्य रेखा को प्रतिभा रेखा या अपोलो रेखा भी कहते हैं ।
6. स्वास्थ्य रेखा को यकृत रेखा भी कहा जाता है ।

## आओ देखें रेखाओं का खेल

मस्तक रेखा हमारे हाथ को दो भागों में बांटती हैं जिसके ऊपर वाले भाग में अंगुलियां तथा बृहस्पति, शनि, सूर्य, बुध एवं मंगल के क्षेत्र होते हैं। ये भाग बौद्धिक तथा मानसिक क्षमता का प्रतिनिधित्व करते हैं। अब हम इन दो भागों को अपना मार्ग दर्शक बनाकर हस्त रेखा ज्ञान की खोज आरम्भ करें।

इस विभाजन की ओर बहुत कम लोग ध्यान दे पाते हैं किन्तु वास्तव में इसकी बहुत विशेषता है, उदाहरण के लिए यदि व्यक्ति की मनोवृति शुरू से ही हिंसात्मक होगी तो मस्तक रेखा असाधारण स्थिति में निकलेगी। यह तो केवल हजारों में से एक उदाहरण है जो इस कथन की सहायता के लिए उद्धत किया जाता है।

## अकाल मृत्यु

बड़े त्रिभुज में भाग्य रेखा के पास जोड़ का चिन्ह हो, चतुष्कोण में गुणा का चिन्ह हो, मस्तक रेखा बुध से शनि-सूर्य के बीच तक ही हो।

## मानव हस्त रेखाएं और हमारा दैनिक जीवन

सर्वप्रथम मानव हस्त रेखाओं के बारे में यह नियम है कि वे साफ तथा सुअंकित होनी चाहिए और न ही चौड़ी हो और न उनका रंग पीला हो। वे टूट फूट रहित, द्वीप रहित और किसी भी प्रकार की अनियमितता रहित होनी चाहिए।

जो रेखाएं अधिक पीले रंग की रेखाएं अच्छे स्वास्थ्य की कमी का प्रतीक मानी जाती है।

देखें कुछ के हाथ के चिन्ह जो हमारे भाग्य से संबंध रखते हैं।

यदि यह रेखा लाल रंग की हो तो ऐसा व्यक्ति उत्साही, आशावादी, परिश्रमी, चुस्त, हर समय खुश रहने वाले होते हैं।

अगर ये रेखाएं हल्के पीले रंग की हों तो ऐसे लोगों में
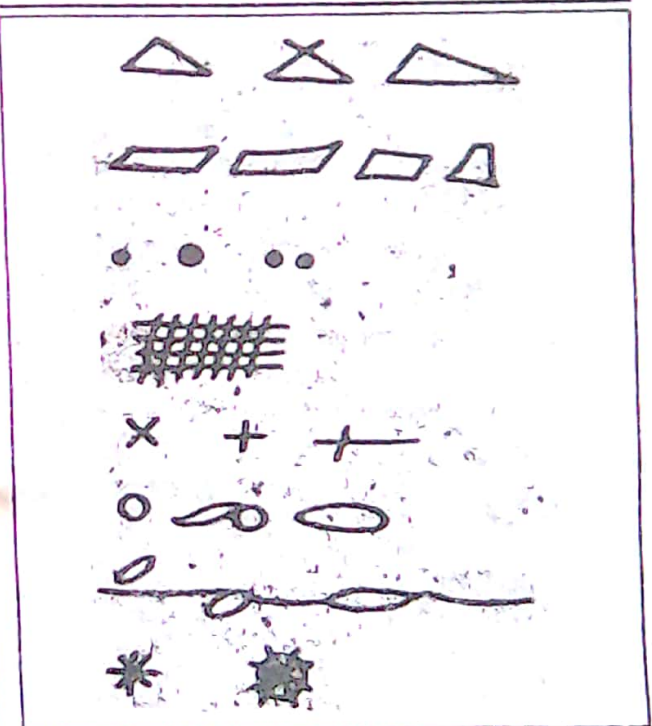


प्राकृतिक रूप से अधिक क्रोध होते हैं। प्रतिशोध की आग में अन्धा होकर भी कभी क्षमा करने वाले होते हैं।

जब भी कभी हाथ की परीक्षा करें तो यह बात ध्यान में रखें कि प्राणी के हाथ की रेखाएं नई बनती, बिगड़ती मिटती रहती है। जैसे जैसे प्राणी की आयु बढ़ती जाती है वैसे वैसे उनकी कल्पना, बुद्धि और सोच सब कुछ बदलता रहता है। इसका प्रभाव हाथ की रेखाओं पर भी पड़ता है।

इन रेखाओं में शुभ क्या है और अशुभ क्या है?

यह देखना तो ज्योतिषी का ही काम है। आप यदि ज्योतिषी

जानना चाहते हैं तो इन रेखाओं की ओर विशेष ध्यान दें । किसी भी हाथ को देखते समय किसी एक अशुभ लक्षण का ही निर्णायक नहीं माना जा सकता है, हर अशुभ लक्षण को रेखाओं के साथ मिलाकर ही निर्णय लें, एक ज्योतिषी ने अचानक ही आकर मुझ से आकर यह प्रश्न किया कि;

क्या लोग हाथ द्वारा प्रदर्शित संकटों से बच सकते हैं?

मैंने कहा "हाँ" किन्तु इसके लिए उन्हें प्रयत्न करने होंगे । परन्तु ऐसा देखा गया है कि लोग इसके लिए प्रयत्न नहीं करते ।

जब कोई सहायक रेखा चल रही हो तो प्रधान रेखा को बल मिलता है, संकट टल सकता है, ऐसे में यदि प्रधान रेखा टूटी हुई हो तो सहायक रेखा उसके दोषों को दूर कर देती हैं ऐसा किसी भी अन्य रेखा की अपेक्षा जीवन रेखा के साथ अधिक होता है ।

यदि कोई भी रेखा अन्त में दो शाखाओं में बंट जाती हो तो उस रेखा को अधिक शक्ति मिलती है । उदाहरण के लिए मस्तक रेखा पर यदि ऐसा हो तो जातक की मानसिक शक्ति में वृद्धि होगी, किन्तु ऐसी रेखा वाला व्यक्ति भिन्न स्वभावों वाला भी हो सकता है ।

जब कोई रेखा गापुद्र में समाप्त होती है तो ऐसा जिस रेखा पर हो उसकी कमजोरी एवं विनाश का प्रतीक समझना चाहिए । यदि ऐसा आकार जीवन रेखा के अन्त में हो तो व्यक्ति के स्नायु तन्त्र कमजोर एवं नष्ट प्रायः हो जाते हैं ।

किसी भी रेखा से ऊपर की ओर उठती हुई शाखाएं उस रेखा को शक्ति प्रदान करती है जबकि नीचे जाने वाली शाखाएं ठीक इससे उल्टा फल देती है ।

यदि किसी प्राणी की शादी की सफलता, असफलता पर विचार करना हो तो हृदय रेखा के शुरू में रहने वाली रेखा बहुत विशेष होती है इसमें उठती हुई रेखाएं प्रेम वृद्धि की प्रतीक होती है तथा नीचे जाती हुई विपरीत फल देती है ।

मस्तक रेखा के ऊपर उठती हुई रेखाएं चतुर, आत्मविश्वास परिश्रमी लोगों की भावनाओं की प्रतीक होती है । ऐसे लोग कारोबार में काफी उन्नति करते हैं ।



कोई भी रेखा यदि जंजीर जैसी आकृति की हो तो यह निर्बलता का लक्षण है । यदि हृदय रेखा ऐसी हो तो वह हृदय की कमजोरी एवं स्नेह में परिवर्तन शीलता का द्योतक होती है । यदि मस्तक रेखा ऐसी हो तो विचारों में पक्केपन की कमी एवं बुद्धि की कमी को प्रकट करती है ।

किसी भी रेखा यदि लहरदार जैसी आकृति की हो तो यह कमजोरी का लक्षण मानी जाती है ।

यदि कोई रेखा बीच में से टूटी फूटी हो तो यह अशुभ मानी जाती है ।

## दायां और बायां हाथ

दायें और बायें हाथ के अन्तर पर विचार करना अलग विषय है । एक ऐसे व्यक्ति को जिसने हाथ बहुत कम देखे हों । यह देखकर आश्चर्य होगा कि एक ही व्यक्ति के दोनों हाथ बिल्कुल अलग-अलग प्रकार के होते हैं । यह उनका अलगपन उनकी रेखाओं से पहचाना जाता है ।

दोनों हाथों को अलग-अलग रूपों में ही पहचाना जा सकता है । कुछ ज्योतिषी मित्र केवल एक ही हाथ यानि दायें हाथ को देखकर ही प्राणी के भाग्य का फैसला कर लेते हैं । मेरे हिसाब से यह बात ज्योतिष विद्या के अनुकूल नहीं है । जब तक आप किसी प्राणी के दोनों हाथों को नहीं देखते तब तक उनके भाग्य के विषय में आपका ज्ञान अधुरा रहेगा इसलिए जब भी आप किसी के भाग्य की रेखाएं पढ़ते हैं उस समय दोनों हाथों की रेखाओं को देखकर ही अपना निर्णय लें ।

यह सिद्धांत बिल्कुल ठीक है कि बायीं हाथ व्यक्ति के प्राकृतिक स्वभाव को बताता है जबकि दायीं हाथ व्यक्ति के प्रशिक्षण, अनुभव और जीवन में जिस वातावरण का सामना उसने किया है उसके बारे में सब कुछ बताता है । बायीं हाथ देखने की पुरानी धारणा के पीछे यही सिद्धांत काम कर रहा था कि यह दिल के अधिक निकट होने के कारण प्राणी के जीवन को दिखाने का एकमात्र दर्पण है परन्तु कुछ लोग इस अंधविश्वास

से अधिक कुछ नहीं मानते क्योंकि यह सब रूढ़िवादी की बातें हैं जो आज के वैज्ञानिक युग में बड़ी बेकार सी लगती हैं ।

ज्योतिष विद्या के अनुसार दोनों ही हाथों को साथ साथ रखकर इनका गम्भीरता से अध्ययन करना चाहिए । भविष्य में क्या होगा यह सब देखने के लिए सीधे हाथ पर निर्भर करो ।

यह बात तभी बड़े मजे की है कि जब लोग बांये हाथ से काम करने वाले हैं उनकी दांये हाथ की रेखाएं ही अधिक स्पष्ट एवं भलीभांति अंकित रहती है । ऐसे लोगों की दांये हाथ की रेखाओं को ही जन्मजात गुणों का आधार मानकर उनके हाथ को देखें । वैसे भी दोनों हाथों की रेखाओं में अन्तर कम होता है ।

## भाग्य रेखा

भाग्य भले आदमियों का मित्र है । बुद्धिमानों का मार्गदर्शक है, और दुष्टों का शत्रु है । भाग्य के लिये बुद्धि जरूरी नहीं लेकिन बुद्धि के लिये भाग्य जरूरी है । भविष्य वर्तमान द्वारा खरीदा जा सकता है । तकदीर के साथ-साथ तदबीर भी जरूरी है । गीता में सात सौ श्लोकों में केवल एक बार भाग्य शब्द का प्रयोग हुआ है । जिसके हाथ में भाग्य रेखा न हो तो वैसे व्यक्ति का जीवन निष्क्रिय, समाज में आदरणीय नहीं पशु या तुच्छ श्रेणी का जीवन माना जाता है । भाग्य रेखा मणिबन्ध से सूर्य पर्वत तक जायें तो भविष्य वक्ता या मस्तक रेखा भाग्य रेखा और स्वास्थ्य रेखा मिलकर त्रिभुज बना लें ।

## जीवन रेखा
## The Life Line

जैसा कि प्राणी के चेहरे पर आंख, नाक, कान, होंठ, मुंह आदि की एक अलग से पहचान है ठीक वैसे ही प्राणी के हाथ की हथेली पर जीवन रेखा, मस्तक रेखा जैसी दूसरी अनेक रेखाओं की भी पहचान बनी रहती है । इन्हीं रेखाओं से हम भविष्य का ज्ञान जानते हैं । देखें चित्र को इसमें यह रेखाएं स्पष्ट दिखाई दे रही है ।



## अल्पायु होने का लक्षण

1. आयु रेखा कई जगह टूटी हो ।
2. तीनों मुख्य रेखाएं एक जगह आकर मिले

जीवन रेखा अंगूठे और गुरू पर्वत से आरम्भ होकर मंगल एवं शुक्र पर्वत को घेरते हुए कलाई तक समाप्त होती है । यदि वह रेखा लम्बी, साफ, गहरी हो तो यह लम्बी आयु, सुन्दर स्वस्थ्य, जीवन शक्ति की प्रतीक होती है । जिस हाथ में यह रेखा जितना अधिक अर्द्ध गोलाकार बनाती है यानि मंगल और शुक्र पर्वत को जितना अधिक क्षेत्र घेरती है, प्राणी में जीवन शक्ति उतनी ही अधिक होगी । यानि जीवन के हर संकट को झेलने की उसमें शक्ति होती है ।

इसके विपरीत पतली, कम गहरी, टूटी फूटी हो, प्राणी में जीवन शक्ति उतनी ही कम होगी । वह रोगों का शिकार होता रहेगा, ऐसे लोग दुखों से टूट जाते हैं ऐसे लोगो को बुढ़ापा जल्दी आ घेरता है । टूटी फूटी जीवन रेखा वाले लोगों को सदा बीमारियां आ घेरती है ।

कभी-कभी जीवन रेखा में छोटी छोटी एवं पतली रेखाएँ जो

नीचे की ओर आती दिखाई देती हैं यह रेखाएँ अधिक भोग के कारण जीवन शक्ति का कम होना बताती है ऐसे लोग अधिक भोग विलासी होते हैं ।

जो रेखाएं जीवन रेखा की मध्य भाग में दिखाई देती है और कभी जीवन रेखा के अन्तिम भाग में होती है यदि ऐसी रेखाएं जीवन रेखा के आरम्भ भाग में हों तो ऐसे लोग बचपन से ही बुरी सोसाइटी में पड़ जाते हैं ।

यदि इन रेखाओं से आगे जाकर जीवन रेखा पतली एवं दोष युक्त हो जाती है तो उसे बुरी संगत के भयंकर परिणाम भोगने पड़ते है ।

यदि इन रेखाओं के आगे जीवन रेखा गहरी और साफ बनी होती है तो उसका प्रभाव भविष्य में इतना अधिक नहीं होता । प्राणी बुरी संगत छोड़कर अपनी जीवन शक्ति की रक्षा में सफल होता है यदि ऐसी रेखाएं मध्य भाग में हो तो ऐसे प्राणी अपनी जवानी में ही दुखी होकर जीवन शक्ति खो बैठते हैं । यदि यही रेखाएं जीवन रेखा के अन्तिम भाग में हो तो ऐसे लोग बुढ़ापे में बुरी संगत में फंस जाते हैं ।

कभी-कभी जीवन रेखा पर द्वीप के चिन्ह भी पाये जाते हैं ये चिन्ह जीवन में रोग एवं दुखों को बताते हैं । जीवन रेखा के जिस भाग में यह चिन्ह होंगे जीवन के उसी भाग में प्राणी को रोग शोक का सामना करना पड़ता है ।

यदि जीवन रेखा मस्तक रेखा एवं हृदय रेखा तीनों ही प्रारम्भ में जुड़ी हो तो यह अत्यन्त ही बुरा चिन्ह है । ऐसे लोग अपनी स्वाभाविक कमजोरियों के कारण अपने जीवन को भयंकर खतरों में डालते हैं ।

यदि जीवन रेखा टूटी हुई हो और उसकी एक शाखा अन्दर की ओर मुड़ कर शुक्र पर्वत पर पहुंच जाए तो यह मृत्यु का प्रतीक होता है यदि यही निशान प्राणी के दोनों हाथों में एक सा ही हो तो इसका अर्थ है प्राणी कभी भी दुर्घटना का शिकार हो सकता है अथवा उसे कोई भयंकर रोग लग सकता है ।

यदि यही रेखा शस्त्र के आक्रमण एवं गहरे घाव या किसी



लड़ाई में किसी गहरी चोट का कारण बन सकती है । देखें चित्र में ये दोनों चिन्ह आपको स्पष्ट दिखाए गए हैं ।

जिन हाथों में जीवन रेखा और मस्तक रेखा मिली हुई होती है वे भी केवल आरम्भ और आगे चलकर अलग-अलग हो जाती है इसका अर्थ है कि ऐसे लोग समाज और घर में मिलजुल कर रहते हैं और दूसरों की सलाह को भी मानते हैं ।

कभी कई हाथों में दोनों रेखाएं एक दूसरे से अलग होकर
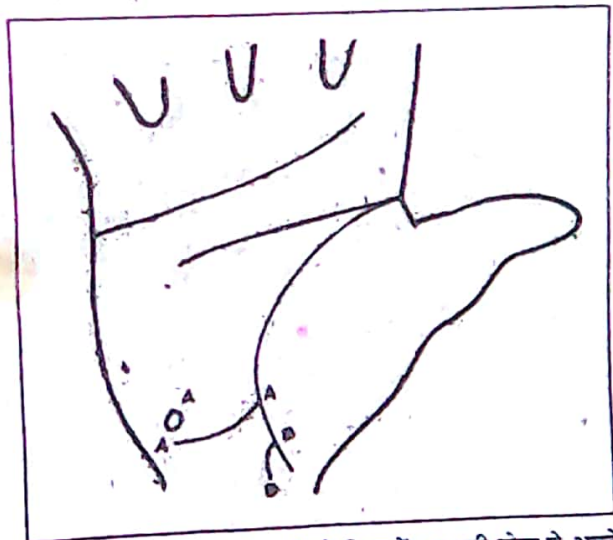
चलती हैं इसका अर्थ है प्राणी के विचारों का धनी होना वे अपने विचारों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप पसंद नहीं करते । इनके अन्दर आत्मविश्वास की भावना कूट-कूट कर भरी होती है ।

कुछ लोगों के हाथों में जीवन रेखा और हृदय रेखा यह तीनों मिली होती है ऐसे लोग दुर्भाग्यपूर्ण होते है। ये लोग दूसरे के मामले में जबरन टांग फंसाते हैं । इनकी मृत्यु भी किसी ऐसे कारण ही अचानक हो जाती है ।

अगर जीवन पर रेखा के अन्त में दो चिन्हों जिनमें से एक शाखा चन्द्र पर्वत पर पहुंच जाये तो ऐसे लोग देश विदेश में घूमने वाले होते हैं ।

## बाहरी लोगों का जीवन पर प्रभाव

प्राणी के जीवन पर कभी-कभी बाहर के लोगों का भी काफी प्रभाव पड़ता है जिसके कारण इनकी सारी जीवनधारा ही बदल जाती है । यह भी कोई जरूरी नहीं कि यह प्रभाव शुभ ही हो यह प्रभाव अशुभ माना जाता है किन्तु यह बात याद रखने योग्य है कि ऐसे प्रभाव जीवन रेखा से ही संबंध रखते हैं ।

जैसा कि कोई छोटी रेखा चन्द्र पर्वत क्षेत्र से आकर जीवन रेखा तक पहुंचती हो तो यह इस बात का प्रतीक है कि प्राणी के जीवन पर किसी किसी बाहरी प्राणी का विशेष प्रभाव पड़ेगा । वह प्रभाव उनके जीवन मार्ग को सिरे से ही बदल सकता है ।

यदि चन्द्र पर्वत क्षेत्र से आकर कोई रेखा जीवन रेखा में बड़ी

गहरी होकर चले तो इससे भी प्राणी पर किसी अभिभावक के प्रभाव का पता चलता है । उदाहरण के लिए देखें चित्र में जो रेखाएं दी गई हैं ।

यदि कोई रेखा जीवन रेखा को काटती हुई आगे बढ़ती है और वहां से जीवन रेखा कमजोर हो जाए तो ऐसे प्राणियों पर किसी व्यक्ति विशेष के प्रभाव का पता चल जाता है । और यह इस बात का प्रतीक होता है कि उनके जीवन में काफी कष्ट आएगा । वह संकटों से गुजरेगा ।

जिन लोगों की शुक्र पर्वत से आकर कोई रेखा जीवन रेखा से मिल जाए तो ऐसे नर नारियों के किसी दूसरे से प्रेम संबंधों का पता चलता है । ऐसी रेखाओं का प्राणी के जीवन पर काफी प्रभाव पड़ता है ।

यदि शुक्र पर्वत क्षेत्र से आने वाली रेखा में द्वीप का चिन्ह हो तो यह उस प्रेम संबंध की सूचक है जो उनके प्रेम के कारण समाज में बदनामी का कारण बनता है इससे कलंकित प्रेम कहते हैं । जिसके कारण लोग अपना जीवन तक नष्ट कर लेते हैं । देखें चित्र में एक ऐसी ही रेखा का चित्र दिया गया है ।

## अविवाहित होने का लक्षण

1. भाग्य रेखा और मस्तक रेखा में यव हो।
2. भाग्य रेखा टेढ़ी हो।
3. विवाह रेखा स्वयं ऊपर की ओर मुड़ जाय तो विवाह करना नहीं चाहता।
4. कनिष्ठा के पहले पर्व पर क्रॉस का चिन्ह हो।

## जीवन रेखा और दुर्घटनाएं

हमारा दैनिक जीवन घटनाओं और दुर्घटनाओं का संग्रह है हर प्राणी के मन में यह लालसा रहती है कि वह उनके बारे में जानकारी प्राप्त करे कई लोगों को मैंने देखा है कि अपना हाथ आगे करके कहेंगे कि

"आप मेरे भविष्य के बारे में कुछ बतायें।"

ऐसे लोगों के पागलपन पर मुझे हंसी आती है और क्रोध भी ऐसा लगता है हमारे देश में लोग ज्योतिष विद्या को बहुत ही सरल और मंगलवार के प्रसाद की भांति बांटी जाने वाली चीज समझने लगे हैं जबकि वास्तविकता तो यह है कि एक हाथ के देखने में एक मास से कम का समय नहीं लगता। इन रेखाओं की भाषा

को पढ़ना क्या इतना सरल है जो कि राह चलता कोई ज्योतिषी आपके भाग्य को बता देगा?

नहीं! बिल्कुल नहीं!

ज्योतिष विद्या बहुत ही कठिन है हाँ यदि आप इस विद्या को जानना चाहते हैं तो उनके लिए मैं यही कहूंगा कि वे इस विद्या को पूरी गम्भीरता से समझें। अब रह गई घटना और दुर्घटना की बात। इसे जानने के लिए तो लोग बहुत ही उतावले रहते हैं।

इन बातों को जानने के लिए आयु रेखा को तीन भागों में बांटते हैं।

1. बाल्यकाल 2. जवानी की आयु 3. बुढ़ापा

अब इन तीनों भागों को चित्र में देखकर आप स्वयं जानने का प्रयास करें। मैं इनका विवरण आगे आपको बता रहा हूं।

## आयु रेखा और अशुभ समय

इस रेखा के प्रारम्भिक भाग को बाल्यकाल कहा जाता है इसलिए इस रेखा के प्रारम्भिक काल में यदि कोई अशुभ चिन्ह हो, वह बिन्दु, द्वीप, रेखा का कटा फटा होना या टेढ़ा मेढ़ी रेखा आयु के उस भाग में दुर्भाग्य का प्रतीक मानी जाती है। जीवन रेखा के आरम्भ काल में कलाई के जिस स्थान पर यह रेखा समाप्त होती है उस स्थान को धागे से रेखा को नाप लेना चाहिए आवा नजरों से नापने का कष्ट करें फिर उसकी सारी लम्बाई का दसवां भाग आयु के आठ वर्ष के बराबर समझना चाहिए बस इन आठ वर्षों में ही आयु रेखा में जहां आपको अशुभ चिन्ह नजर आये तो समझ ले यह कष्टदायक अथवा बुरा समय है।

जीवन रेखा पर और भी कई प्रकार के चिन्ह होते हैं उन सबका प्रभाव अलग अलग मानव जीवन पर पड़ता है।

आयु रेखा पर क्रॉस का चिन्ह हो तो दुर्घटना, यव हो तो भयंकर बीमारी, तकलीफ लाल बिन्दु हो तो बुखार काला बिन्दु हो तो असाध्य रोग पर वर्ग हो तो बचाव। अन्त में धब्बा काला, चोट से मृत्यु।

## बिन्दु :

जीवन रेखा पर जहां कहीं भी बिन्दु का चिन्ह हो तो समझ

अगर जीवन पर रेखा के अन्त में दो चिन्हों जिनमें से एक शाखा चन्द्र पर्वत पर पहुंच जाये तो ऐसे लोग देश विदेश में घूमने वाले होते हैं ।

## बाहरी लोगों का जीवन पर प्रभाव

प्राणी के जीवन पर कभी-कभी बाहर के लोगों का भी काफी प्रभाव पड़ता है जिसके कारण इनकी सारी जीवनधारा ही बदल जाती है । यह भी कोई जरूरी नहीं कि यह प्रभाव शुभ ही हो यह प्रभाव अशुभ माना जाता है किन्तु यह बात याद रखने योग्य है कि ऐसे प्रभाव जीवन रेखा से ही संबंध रखते हैं ।

जैसा कि कोई छोटी रेखा चन्द्र पर्वत क्षेत्र से आकर जीवन रेखा तक पहुंचती हो तो यह इस बात का प्रतीक है कि प्राणी के जीवन पर किसी किसी बाहरी प्राणी का विशेष प्रभाव पड़ेगा । यह प्रभाव उनके जीवन मार्ग को सिरे से ही बदल सकता है ।

यदि चन्द्र पर्वत क्षेत्र से आकर कोई रेखा जीवन रेखा में बड़ी

गहरी होकर चले तो इससे भी प्राणी पर किसी अभिभावक के प्रभाव का पता चलता है । उदाहरण के लिए देखें चित्र में जो रेखाएं दी गई हैं ।

यदि कोई रेखा जीवन रेखा को काटती हुई आगे बढ़ती है और वहां से जीवन रेखा कमजोर हो जाए तो ऐसे प्राणियों पर किसी व्यक्ति विशेष के प्रभाव का पता चल जाता है । और यह इस बात का प्रतीक होता है कि उनके जीवन में काफी कष्ट आएगा । वह संकटों से गुजरेगा ।

जिन लोगों की शुक्र पर्वत से आकर कोई रेखा जीवन रेखा से मिल जाए तो ऐसे नर नारियों के किसी दूसरे से प्रेम संबंधों का पता चलता है । ऐसी रेखाओं का प्राणी के जीवन पर काफी प्रभाव पड़ता है ।

यदि शुक्र पर्वत क्षेत्र से आने वाली रेखा में द्वीप का चिन्ह हो तो यह उस प्रेम संबंध की सूचक है जो उनके प्रेम के कारण समाज में बदनामी का कारण बनता है इससे कलंकित प्रेम कहते हैं । जिसके कारण लोग अपना जीवन तक नष्ट कर लेते हैं । देखें चित्र में एक ऐसी ही रेखा का चित्र दिया गया है ।

## अविवाहित होने का लक्षण

1. भाग्य रेखा और मस्तक रेखा में यव हो ।
2. भाग्य रेखा टेढ़ी हो ।
3. विवाह रेखा स्वयं ऊपर की ओर मुड़ जाय तो विवाह करना नहीं चाहता ।
4. कनिष्ठा के पहले पर्व पर क्रॉस का चिन्ह हो ।

## जीवन रेखा और दुर्घटनाएं

हमारा दैनिक जीवन घटनाओं और दुर्घटनाओं का संग्रह है हर प्राणी के मन में यह लालसा रहती है कि वह उनके बारे में जानकारी प्राप्त करे कई लोगों को मैंने देखा है कि अपना हाथ आगे करके कहेंगे कि

"आप मेरे भविष्य के बारे में कुछ बतायें ।"

ऐसे लोगों के पागलपन पर मुझे हंसी आती है और क्रोध भी ऐसा लगता है हमारे देश में लोग ज्योतिष विद्या को बहुत ही सरल और मंगलवार के प्रसाद की भांति बांटी जाने वाली चीज समझने लगे हैं जबकि वास्तविकता तो यह है कि एक हाथ के देखने में एक मास से कम का समय नहीं लगता । इन रेखाओं की भाषा

को पढ़ना क्या इतना सरल है जो कि राह चलता कोई ज्योतिषी आपके भाग्य को बता देगा?

नहीं! बिल्कुल नहीं ।

ज्योतिष विद्या बहुत ही कठिन है हाँ यदि आप इस विद्या को जानना चाहते हैं तो उनके लिए मैं यही कहूंगा कि ये इस विद्या को पूरी गम्भीरता से समझें । अब रह गई घटना और दुर्घटना की बात । इसे जानने के लिए तो लोग बहुत ही उतावले रहते हैं ।

इन बातों को जानने के लिए आयु रेखा को तीन भागों में बांटते हैं ।

1. बाल्यकाल 2. जवानी की आयु 3. बुढ़ापा

अब इन तीनों भागों को चित्र में देखकर आप स्वयं जानने का प्रयास करें । मैं इनका विवरण आगे आपको बता रहा हूँ ।

## आयु रेखा और अशुभ समय

इस रेखा के प्रारम्भिक भाग को बाल्यकाल कहा जाता है इसलिए इस रेखा के प्रारम्भिक काल में यदि कोई अशुभ चिन्ह हो, वह बिन्दु, द्वीप, रेखा का कटा फटा होना या टेढ़ा मेढ़ी रेखा आयु के उस भाग में दुर्भाग्य का प्रतीक मानी जाती है । जीवन रेखा के आरम्भ काल में कलाई के जिस स्थान पर वह रेखा समाप्त होती है उस स्थान को धागे से रेखा को नाप लेना चाहिए अथवा नजरों से नापने का कष्ट करें फिर उसकी सारी लम्बाई का दसवां भाग आयु के आठ वर्ष के बराबर समझना चाहिए बस इन आठ वर्षों में ही आयु रेखा में जहां आपको अशुभ चिन्ह नजर आये तो समझ ले वह कष्टदायक अथवा बुरा समय है ।

जीवन रेखा पर और भी कई प्रकार के चिन्ह होते हैं उन सबका प्रभाव अलग अलग मानव जीवन पर पड़ता है ।

आयु रेखा पर क्रॉस का चिन्ह हो तो दुर्घटना, यव हो तो भयंकर बीमारी, तकलीफ लाल बिन्दु हो तो बुखार काला बिन्दु हो तो असाध्य रोग पर वर्ग हो तो बचाव । अन्त में धब्बा काला, चोट से मृत्यु ।

## बिन्दु :

जीवन रेखा पर जहां कहीं भी बिन्दु का चिन्ह हो तो समझ

लो यह किसी रोग का प्रतीक है । इस आयु का जो भी भाग आप जानना चाहेंगे उसके लिए इसके साथ ही आयु के तीन भागों में बांट कर आपको बताया गया है ।

जिन लोगों की जीवन रेखा पर लाल बिन्दु हो तो समझ लो कि उनकी आयु के इस भाग में बुखार का रोग लगेगा ।

यदि बिन्दु का रंग पीला हो तो ऐसे प्राणी जिगर रोगों से दुःखी रहेंगे ।

नीले रंग के बिन्दु वाले रक्ताल्पता, (खून की कमी) का शिकार होते हैं ।

यदि जीवन रेखा एकदम से समाप्त हो जाये और उस समाप्त होने वाले स्थान पर बिन्दु का निशान हो तो समझ लेना चाहिए ऐसे प्राणी किसी दुर्घटना का शिकार हो सकते हैं

## द्वीप

जिन लोगों की आयु रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो ऐसे लोग कई प्रकार के शिकार हो जाते हैं और उनको घरेलू तथा सामाजिक उलझनों का भी शिकार रहना पड़ता है ।

## क्रास

आयु रेखा को यदि कोई रेखा काटती हुई गुजर जाती है तो समझ लेना चाहिए कि आयु के इस भाग में किसी बहुत बड़े झंझट का सामना करना पड़ेगा । यदि कोई रेखा मंगल क्षेत्र से निकल कर जीवन रेखा को काटती है तो समझ लो कि आपके किसी सम्बन्धी अथवा मित्र से आपका झगड़ा होगा ।

## नक्षत्र

जीवन रेखा पर यदि कोई नक्षत्र का चिन्ह हो तो उसे भी अशुभ ही माना जाता है इसका अर्थ है अशांति अथवा आयु के उस भाग में दुर्घटना का शिकार होना इस चिन्ह की विशेषता यह है कि यह दुर्घटना होने के पश्चात् ही हाथ से गायब हो जाता है ।

यदि यही चिन्ह जीवन रेखा पर अथवा मंगल क्षेत्र में हो तो यह भिन्न प्राणी के लिए अत्यन्त लाभदायक भी हो जाता है । ऐसे लोग हर समय खुश रहते हैं उनका भाग्य सदा उनका साथ देता
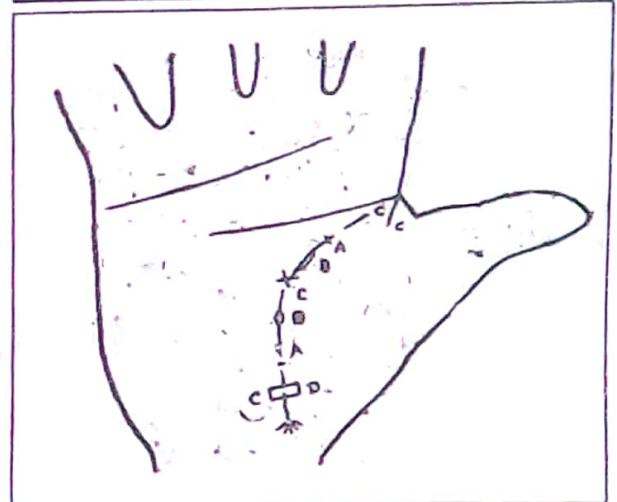


है आयु के जिस भाग में यह चिन्ह हो वही भाग शुभ होता है उस आयु में प्राणी कोई भी काम आरम्भ करें उसे लाभ ही होगा यह भी हो सकता है कि उस आयु में उसे कोई पुरस्कार अथवा उपाधि भी प्राप्त हो जाये ऐसे चिन्ह काफी प्रसिद्ध और आविष्कारकों के हाथों पर होते हैं ।

उदाहरण के लिए आप के हाथ के चित्र में आयु रेखा को देखे उसमें अलग-अलग से कुछ चिन्ह साफ दिखाई दे रहे हैं जिनके बारे में आपको बताया जा रहा है एक ज्योतिष विद्यार्थी का यह कर्त्तव्य है कि वह हाथ की रेखाओं को अच्छी तरह से समझ लें । जल्दबाजी में भूल कर भी कोई फैसला न करें केवल लोगों को खुश करने के लिए झूठी बाते न कहें प्राणी के हाथ की हर रेखा एक पुस्तक है । जीवन की इस पुस्तक की भाषा के केवल वही लोग पढ़ सकते हैं जिनके पास ज्योतिष का ज्ञान होगा इसलिए पहले अपने अन्दर इतना ज्ञान पैदा करें अज्ञानी लोग केवल धन के लोभ में अन्धे होकर ज्योतिष विद्या को बदनाम कर

दिया । मैं अपने पाठकों एवं विद्यार्थियों से यह प्रार्थना करने जा रहा हूँ कि वे इस पुस्तक के ज्ञान का कहीं भी दुरूपयोग न करें । ज्योतिष विद्या की पवित्रता एवं श्रेष्ठता को बनाए रखना आपका सबसे बड़ा कर्त्तव्य है । इसलिए पहले समझें, हाथ को देखने के लिए बहुत समय लगता है । कुछ मिनटों में ही जीवन के बारे में बताया नहीं जा सकता, क्योंकि जीवन तो बहुत लम्बा है और आपके ये मिनट बहुत छोटे हैं । हाथ देखने से पहले हर प्राणी को बता दो कि,

यदि तुम वास्तव में ही अपना भविष्य जानना चाहते हो तो उसके लिए कुछ दिन प्रतीक्षा अवश्य करनी होगी ।

अब आप यह सोचेंगे कि क्या यह प्राणी कुछ दिनों तक आपके पास बैठा रहेगा और आप उसका हाथ पकड़ कर बैठे-बैठे उसे देखते रहेंगे ।

नहीं, ऐसा नहीं है । आप यदि वास्तव में ही ईमानदारी से किसी प्राणी का हाथ देखना चाहते हैं तो इसका एकमात्र रास्ता यही है कि आप उस प्राणी का हाथ दोनों हाथों के निशान पैड की काली स्याही से सफेद कागज पर छाप लीजिए । जैसे लोग अंगूठे लगाते हैं ठीक ऐसे ही आपको कागज पर हाथ का निशान लगवाना होगा । उदाहरण के लिए मैं आपके सामने एक हाथ के निशान का चित्र दे रहा हूँ, चित्र में आप इस हाथ को देख रहे हैं ऐसे ही आपको भी कागज पर ऐसे ही हाथ लगवाने हों, फिर उसके पश्चात् आपको एकांत में बैठकर ज्योतिष की पुस्तकों की सहायता से उसका भविष्य जानना होगा ।

वैसे यह जो हाथ आपके सामने छपा हुआ है यह एक खुनी का हाथ है । अपराधी के इस हाथ से आप अपना ज्ञान तो बढ़ा ही सकते हैं ।

## तिल पठन

तर्जनी परी तिल हो तो झगड़ा करे अनामिका पर तिल हो तो विद्या और लक्ष्मी की प्राप्ति अंगूठा में तिल हो तो धन पुत्र से युक्त, मध्यमा तिल हो तो शान्त स्वभाव, कण्ठ में भक्त, भुजा में हो तो धनी । नेत्र में तिल तो परस्त्रीगामी होठ में हो तो लोभी ।